5·2

गोस्वामी तुलसीदास की दुर्लभ जीवन-गाथा

नवरत्नावलीयम्

22

॥ चम्पूकाव्यम् ॥

: रचयिता :

पंडित शिवप्रसाद द्विवेदी

नवरत्नावलीयम्

(चम्पूकाव्यम्)

रचयिता

पंडित शिवप्रसाद द्विवेदी

कथासारप्रणेता सम्पादकश्च

डॉ. सुरेश्वर द्विवेदी

आयुर्वेद धर्मशास्त्राचार्य, एम. ए., पी-एच. डी.

नवरत्नावलीयम्
(चम्पूकाव्यम्)

कवि ::
पं. शिवप्रसाद द्विवेदी
बी १/२३८, सत्तीबाड़ा, अस्सी, वाराणसी

प्रकाशकः सम्पादकश्च
डा. सुरेश्वर द्विवेदी

प्रथम संस्करणम् ::
१९८३

मूल्यम् : ११ रुपये

मुद्रक
साहित्यकार प्रेस
भदैनी, वाराणसी

सन्तशिरोमणि गोस्वामी तुलसीदास

के

पथ प्रदर्शक

प्रातः स्मरणीय महावीर हनुमान

के

उपास्यदेव

भगवान् श्रीराम

के

चरणों में

श्रद्धया समर्पित

• पं० शिवप्रसाद द्विवेदी

काशीवासतव्यः

अनुक्रमः

वालरत्नम्	१
यतिरत्नम्	९
पण्डितरत्नम्	२६
कन्यारत्नम्	४०
पुरुषरत्नम्	४७
तीर्थरत्नम्	५४
प्रेतरत्नम्	६१
ग्रन्थरत्नम्	७१
पुरुषार्थरत्नम्	७६

प्रकाशकीय

भगवान श्री राम की कथा को सारी धरती पर प्रसारित करने वाले महान संत कवि गोस्वामी तुलसीदास जी की सम्पूर्ण जीवन गाथा आज भी हमारे समक्ष अपूर्ण है। बहुधा रचनाकार अपने संदर्भ में कुछ नहीं लिखते। यही कारण है कि अन्य महाकवियों की भाँति गोस्वामी जी के भी जन्म स्थान एवं जीवन से संबंधित तथ्यों पर नयी-नयी मनगढ़न्त एवं अप्रामाणिक अटकलें उड़ाई जाती हैं। इनके जन्म से संबन्धित प्रामाणिक रूप में कोई आधार अभी तक नहीं प्राप्त हो सका है। मनन एवं प्रामाणिक बिखरे हुये आधारों पर गोस्वामी जी के जीवन चरित्र को मेरे पूज्य पितामह पण्डित शिवप्रसाद जी द्विवेदी ने सरल संस्कृत वाङ्मय के द्वारा चम्पूकाव्य के रूप में पूर्ण किया है, जो उपर्युक्त कमियों को पूर्णरूपेण प्रस्तुत करता है। यह कार्य बहुत पहले ही हो चुका था, किन्तु संयोगवश रुका पड़ा था। यह नवरत्नावलीयम् नामक चम्पूकाव्य सरलता के साथ-साथ संस्कृत भाषा में एक नयी कड़ी जोड़कर अपना विशेष स्थान रखता है। सर्वबोधगम्यता ही इसकी अपनी विशिष्टता है। इस चम्पूकाव्य में नवरत्न क्रमशः छोटे-बड़े रूप में विभाजित हैं। गोस्वामी जी की धर्मपत्नी रत्नावली के नाम पर ही इस नवीन ग्रंथ का नामकरण किया गया है। भक्ति परक भावों को रखता हुआ यह काव्य अत्यन्तलोकोपकारी होगा, ऐसा दृढ़ विश्वास है। भिन्न-भिन्न स्थलों पर भारतीय देवी, देवताओं की स्तुतियां भरी पड़ी हैं, जो गोस्वामी जी के भक्ति-मार्ग को विशिष्टता प्रदान करती हैं। जन्म से ही गोस्वामी जी ने अत्यन्त कष्टप्रद एवं लोकमर्यादित

जीवन व्यतीत किया था। तीर्थों का भ्रमण कर उसकी विशेषताओं को मन में सजोना उनका अपना धन था। इन सभी विशेषताओं को कवि ने गद्य एवं पद्य के माध्यम से प्रदर्शित करके अपना वैशिष्ट्य सुरक्षित कर लिया है। इसके अध्ययन से पाठकगण स्वयं अनुभव करेंगे।

प्रकाशन सम्बन्धी अनेक कठिनाइयां उपस्थित हुईं, पर भगवान भूतभावन की कृपा से यह काव्य पाठकों के सामने उपस्थित हो सका है। कवि की दूसरी कृति (शुक दूतम्) जो प्रेस में है, शीघ्र ही प्रकाशित हो रही है। यह दूत काव्य भी कवि की मनोहारी रचना है।

इस ग्रंथ के प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में जिन व्यक्तियों ने सहायता प्रदान की है, हम उनके प्रति आभारी हैं। अपने प्रिय शिष्य पंडित राजेन्द्रमणि त्रिपाठी एवं पंडित मंगल मिश्र, पड़रौना के विशिष्ट सहयोग एवं श्रद्धा भावना के प्रति पूज्य पितामह ने स्वयं आशीर्वाद प्रदान किये हैं जिन्हें हार्दिक साधुवाद देना मैं अपना पुनीत कर्त्तव्य मानता हूँ। साथ ही साथ अपने अनन्य मित्रों में श्री रवीन्द्र नाथ मिश्र एवं श्री महेशमणि त्रिपाठी का भी सहयोग सराहनीय रहा है।

हमें पूरा विश्वास है कि साहित्यानुरागी इस कृति को समादर प्रदान कर हमारे श्रम को सार्थक करेंगे।

सुरेश्वर द्विवेदी

श्री

संक्षिप्त कथासार

बालरत्न

प्रसिद्ध बाँदा जनपद में राजापुर नामक ग्राम, यमुना नदी के तट से कुछ दूर पर बसा है, जो धन-धान्य एवं सज्जनों से परिपूर्ण है। उसी पावन ग्राम में आत्माराम दूबे ब्राह्मण धर्मानुयायी हुए थे। उनकी परमप्रिया पति सेवनशीला धर्मपत्नी हुलसी देवी थीं जो तुलसी जी की अत्यन्त श्रद्धा से सेवा किया करती थीं। तुलसी के ही प्रभाव से समयानुसार उन्होंने गर्भ धारण किया। दोहद की इच्छाओं को पूर्ण करते हुए पति ने सुपुत्र की कामना से देवार्चन भी किया। भगवत की कृपा से पुत्र भी उत्पन्न हुआ। परन्तु उत्पन्न बालक के मुख में सभी दन्त पक्तियां गर्भावस्था से ही विद्यमान थी। उत्पन्न होते समय बालक के मुख से 'राम शब्द' उच्चरित हुआ। रोने की तो बात दूर रही। यह जानकर पिता चिन्ताकुल होकर स्वजनों से परामर्श करके नवजात शिशु को अनिष्ट मानकर वन में रख दिया जाय, ऐसा निर्णय लिया। इस निर्णय को जानकर बालक की माँता अत्यन्त शोकाकुल होकर अपनी चुनियां नामक दासी को बुलाकर बच्चे के साथ उसे ससुराल भेजने का अत्यन्त दुःख के साथ परामर्श कर बच्चे के पालन पोषण निमित्त अपने आभूषण उसे देकर उसके ससुराल भेज दिया। ससुराल में चुनियाँ ने अत्यन्त प्रेम के साथ बालक का लालन-पालन किया। बालक जब पांच वर्ष का हुआ, उसी समय दैव संयोग से सर्प दंश से चुनियाँ मृत्यु को प्राप्त हो गयी और बालक अनाथ हो गया। ग्रामवासियों ने बालक के पिता को उक्त समाचार भेजकर 'बालक रत्न' को अपने पास ले जाने को कहा। परन्तु अनिष्ठ की आशंका से पिता ने उसे अस्वीकार कर दिया। 'बालरत्न' रामबोला की ग्रामीण जन ही देखभाल करने लगे।

महापुरुषों का भविष्य एवं जन्म अद्भुत ही होता है। जन्म से ही 'रामबोला' राम का नाम जपते हुए साधु सज्जनों में भक्ति रखते थे।

यतिरत्न

एक दिन संध्या समय स्वामी नरहरयानन्द जी भ्रमण करते हुये राजापुर ग्राम में आये। गांव के ही एक पीपल वृक्ष के नीचे उन्होंने अपना आसन रखा। ग्रामीण जन तेजस्वी महात्मा को देखकर प्रसन्न हुए तथा श्रद्धा के साथ महात्मा का यथोचित सत्कार किया। रामबोला भी वहीं उपस्थित थे। सुन्दर शरीर एवं धर्मानुरागी तेजस्वी बालक को देखकर स्वामी जी ने सज्जनों से पूछा, यह बालक कौन है। सज्जनों ने सविस्तार सम्पूर्ण बातें बतायीं। वृतान्त जानने के बाद सन्ध्या के समय महात्मा ने भोजनोपरान्त रात्रि-विश्राम किया। प्रातःकाल उठने के बाद रात्रि स्वप्न का विवरण ग्रामीणों को बताया, कि भगवान राम ने मुझे आज्ञा दी है कि रामबोला को तुम अपने पास रखो एवं उसकी रक्षा करते हुए विद्याध्ययन कराओ। यह बात सबको अच्छी लगी। रामबोला का भाग्य खुला, ऐसा सज्जनों ने कहा। आप बालक को ले जांय हमलोगों की भी यही कामना है। स्वामी जी बालक को साथ लेकर अयोध्या जाने हेतु प्रयाग आये। प्रयाग में नित्य क्रिया करके भारद्वाज आश्रम में उन्होंने रात्रि बितायी। पुनः प्रस्थान कर धीरे-धीरे अयोध्या पहुंच गये। अयोध्या में हनुमान मन्दिर के पास विश्राम किये। हनुमान जी की स्वयं पूजा करके, रामबोला से भी पूजा करायी। रामबोला को ऐसा ज्ञात हुआ कि हनुमान जी मेरे ऊपर प्रसन्न हैं। उनके आशीर्वाद से विद्वान हो जाऊँगा। महात्मा ने सरयू के तट पर विद्वान ब्राह्मणों द्वारा बालक का उपनयन संस्कार सम्पन्न करके पढ़ाना आरम्भ कर दिया। बालक दिन प्रतिदिन तेजस्वी होने लगा। सरयू तट 'सूकर क्षेत्र' में जाकर महात्मा ने अपनी कुटिया बनायी और बालक को व्याकरण शिक्षा के साथ साथ वाल्मीकि रामायण का पाठ भी कराने लगे। कुटी के आस पास पुष्प वाटिका

लगायी गयी तथा तुलसी के पौधे भी लगे। तुलसी को सींचना एवं तुलसी पत्र भगवान को चढ़ाना ब्रह्मचारी रामबोला का नित्य नियम था। तुलसी के प्रति अत्यन्त श्रद्धा के कारण ही रामबोला तुलसीदास कहलाने लगे। समीप के लोगों की सहायता से ही वस्त्र-भोजन का प्रबन्ध हो जाया करता था। कुछ दिनोपरान्त विशेष ज्ञान निमित्त महात्मा जी तुलसीदास जी के साथ काशी आये, और पंचगंगा घाट पर 'शेष: सनातन' जी महापण्डित के पास पढ़ने हेतु रहने का प्रबन्ध किये।

पण्डितरत्न

नवीन गुरु के प्रयास से प्रसन्न चित्त हो तुलसीदास जी अध्ययन करने लगे। कुछ समय के बाद स्वामी जी तीर्थयात्रा निमित्त प्रस्थान किये। तुलसीदास जी पितृतुल्य महात्मा के विलगाव से अश्रुपात करने लगे। पर महात्मा ने प्रेमपूर्वक समझाया कि तुम पढ़कर विद्वान बनो, मैं तीर्थयात्रा कर पुन: आऊँगा। प्रखर बुद्धि होने के कारण तुलसी दास जी शीघ्र ही शास्त्रज्ञाता हो गये। नित्य-प्रति गंगा स्नान एवं भगवान विश्वनाथ की पूजा तथा अनध्याय के दिन अन्य देवों का दर्शन किया करते थे। 'शेषसनातन' गुरु के काशीवास हो जाने पर निराश्रय होकर उद्विग्न एवं दु:खी रहने लगे। सोच-विचार कर एक दिन काशी की परिक्रमा करते हुए अपने जन्म स्थान को प्रस्थान किये। मार्ग में गुरु द्वारा कृत उपकारों को स्मरण करते हुए गांव-गांव विश्राम करते एक दिन जन्मभूमि को पहुंच गये। गांव के बाहर एक कुएं पर बैठा देखकर उसी गांव के एक ब्राह्मण ने पूछा, आप कौन हैं। कहाँ से आ रहे हैं? तुलसीदास जी ने कहा, मैं काशी से पढ़कर आ रहा हूं, और आप कौन है! ग्रामीण ब्राह्मण ने कहा मैं इसी राजापुर का निवासी हूं। इस पर उन्होंने कहा, मेरा जन्म भी इसी गाँव में हुआ था। ब्राह्मण ने कहा, क्या आप आत्माराम दूबे के पुत्र रामबोला हैं? हां, अब मुझे लोग ब्रह्मचारी तुलसीदास कहते हैं। तदुपरान्त दोनों व्यक्ति एक साथ गांव को गये।

कन्यारत्न

अपने घर पर ही तुलसीदास जी 'रामचरित मानस' की कथा नित्य ही कहा करते थे। इनकी कथा-शैली में अद्भुत चमत्कार था। प्रचार बढ़ने लगा। दूर-दूर से आकर लोग कथा रसपान करने लगे। कथा की प्रसिद्धि सुनकर एक दिन समीप के ही निवासी 'दीनवन्धु' पाठक कथा श्रवण करने आये। कथा से आनन्दित होकर घर लौटते हूए, उन्होंने विचार किया कि यह ब्रह्मचारी गृहस्थाश्रम में प्रवेशयोग्य हो गया है। यदी मेरी रूपवती कन्या रत्नावली से पाणिग्रहण संवध होता तो उत्तम रहता। विचारों के तर्क वितर्क में ही पाठक जी अपने घर पहुंच गये। उन्होंने अपनी भार्या से कहा कि यदि राजापुर के कथावाचक ब्रह्मचारी के साथ अपनी विदुषी रत्नावली का विवाह पूर्ण हो जाता तो—रत्नं समागच्छतु काञ्चनेन" यह आप्तोक्ति चरिचार्थ हो जाती। ब्राह्मणी प्रसन्न होकर कन्या रत्न देने हेतु स्वीकृति दे दी। शीघ्र ही पाठक जी ने ब्रह्मचारी के पास जाकर निवेदन किया कि मेरी पुत्री रूप सौन्दर्य एवं विद्या से युक्त आपके योग्य है। आप कृपा करने की आज्ञा प्रदान करें। ब्रह्मचारी ने कहा मैं बन्धन से दूर ही रहकर भगवत् भजन करना चाहता हूं। परन्तु मित्रों एवं पाठक जी के आग्रह के समक्ष स्वीकार करना पड़ा। विधि-वत् पाणिग्रहण संस्कार पूर्ण हुआ। पति-पत्नी के सुख पूर्वक दिन बीतने लगे। तुलसीदास जी भार्या-प्रेम में लीन रहा करते थे। एक दिन अपने बन्धुजन के साथ रत्नावली अपने पिता के घर चली गयी। घर खाली होने के नाते उदास होकर तुलसीदास जी शीघ्र ही स्वसुर के घर गये। सत्कारोपरान्त पत्नी ने पूछा, सकुसल तो हैं, हां, तुम्हारे प्रेम में विह्वल होकर आ गया हूं। यह सुनकर पत्नी ने कहां पचभौतिक शरीर सदृश प्रेम भगवान में आपका होता तो, हम दोनों का उद्धार हो जाता। यह सुनकर तुलसीदास जी ने विचार किया और मन ही मन अपने को कोसते हुए भगवत् भजन का दृढ़ निश्चय कर त्याग की भावना से परिव्राजक हो गये, और भ्रमण पर निकल पड़े।

पुरुषरत्न

विचारों की श्रृंखलाओं में डूबते-उबरते, कहां जाऊं, क्या करूं ! शान्ति कैसे प्राप्त होवे, विचरते रहे। संयोग वशात् मार्ग में ही एक गांव पडा। वहां एक बाह्मण देवता नित्य नियमादि (पूजापाठ) कर रहे थे। उन्हें देखकर स्वामी जी सन्निकट जाकर अभिवादन करके बैठ गए। पूजा से निवृत्त होने पर ब्राह्मण ने पूछा, आप कौन हैं, कहां से आ रहे हैं, और कहां जायेंगे। स्वामी जी ने कहा, राजापुर ग्राम से आ रहा हूं, सदुपदेश एव शान्ति चाहता हूं। ब्राह्मण ने कहा आप तो विद्वान हैं ही, तीर्थयात्रा करें शान्ति प्राप्त होगी। वे शीघ्र ही प्रयाग गए और वहां का नित्य-नियमादि करके भारद्वाजाश्रम में रात्रि भर निवास कर प्रातः तमसा नदी को पार करते हुए अयोध्या पहुंच गए। अयोध्या में गुरु जी के यहां ही दीक्षा ग्रहण कर राम-राम जपते हुए लक्ष्मणपुर जाकर धीरे-धीरे काशी पहुंचे। काशी से यात्रा करते हुए जगन्नाथ धाम जाकर समुद्र स्नान, देवदर्शन तथा प्रसाद भक्षण कर विचित्रता का अनुभव किए। यह तीर्थ अन्य तीर्थों से अलग ही है क्योंकि यहां भेद-भाव नहीं दीख पड़ता। कुछ समय धाम में निवास कर यात्रा प्रारंभ करते हुए रामेश्वरम् पहुंचकर देव दर्शन करते हुए पुनः द्वारिका धाम, कनखल होते हुए बदरीकाश्रम, गंगोत्री, यमुनोत्री, मानसरोवर को गए। वहां से कैलाश शिखर का दर्शन कर प्रसन्न मन से चित्रकूट पहुंच गये।

तीर्थरत्न

चित्रकूट में ही तृणकुटी बनाकर निवास करने लगे। कुछ समय बाद एक दिन शौच से निवृत्त होकर आते हुये मार्ग में ही पीपल वृक्ष की छाया में एक प्रेत का दर्शन हुआ। प्रेत ने स्वामी जी से कहा आप प्रतिदिन मुझे जल दिया करते हैं, जल देने से मैं प्रसन्न हू, जो चाहे आप वर मागें। राम दर्शन की कामना कैसे पूरी होगी, स्वामी जी ने कहा। प्रेत ने कहा, यह तो संभव नहीं पर उपाय बताता हूं। आपकी जब कथा होती है तो, कथा श्रवण करने के लिए हनुमान जी वेष बदलकर उपस्थित होते हैं। आप कथा समाप्ति पर उनका चरण पकड़ें। पहले तो वे निषेध करेगें, पुनः स्वीकार कर आपको दर्शन करायेंगे। प्रेत के आशीर्वाद एवं हनुमान जी की कृपा से यह संकल्प पूरा हुआ।

प्रेतरत्न

भगवान् राम का दर्शन प्राप्त कर गोस्वामी जी कृतार्थ हो गये, उन्होंने कहा, तुम प्रेत नहीं रत्न ही हो, तुम्हारा कल्याण होवे। चित्रकूट से काशी आकर गोस्वामी जी हनुमान घाट पर रुके। वहां यवनों की बहुलता थी, अतः गोपाल मन्दिर आकर वाटिका के नैऋत्य कोण की कुटी में रहने लगे। यहीं इन्होंने विनय-पत्रिका की रचना की। क्योंकि गगावेणीमाधव का वर्णन इसमें मिलता है। वाद में गायघाट पर ही रहे। काशी में आने के वाद वारह हनुमान मंदिरों का निर्माण करा कर मूर्ति स्थापना इन्होंने की। रामलीला का भी प्रबन्ध किया जो आजतक चल रही है। पुनः जनकपुर गये, वहां दर्शन करके भृगुक्षेत्र होते हुए नैमिषारण्य गये। वहां वनखण्डी वावा तीर्थोद्धार कर रहे थे। इनकी सहायता कर कार्य पूरा किये। वहां से वृन्दावन गये। कृष्ण की महिमा जानकर मथुरापुरी का दर्शन करते हुए काशी आ गये। यहां रहकर अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ रामचरित मानस की रचना पूर्ण की। यह मानस ग्रन्थ अत्यन्त लोकोपकारी है तथा इसकी महिमा अवर्णनीय है। इस महाग्रन्थ ने अपने प्रभाव से युग परिवर्तन ही कर दिया है।

ग्रन्थरत्न

गोस्वामी जी के चौदह ग्रंथों में रामचरित मानस रत्न ही है। इसकी प्रशंसा बहुत भी थोड़ी है। विदेशों में भी श्रीमद्भगवद्गीता के समान इसकी प्रशंसा होती है। भारतीयों की तो यह विशिष्ट पुस्तक है। जिससे धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक सभी व्यवहार सुसम्पन्न होते हैं।

पुरुषार्थरत्न

अन्त में पुरूषार्थ साधन के निमित्त श्रीविश्वनाथ के स्तवन पूजन ध्यान द्वारा चतुर्थ पुरुषार्थ सिद्धि के लिए सतत् अविमुक्त, पुण्य वाराणसी क्षेत्र में स्थिर हो काशी वास करने लगे। सम्वत् १६८० को श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन गंगा तट पर स्थित पीपल वृक्ष के नीचे योगासन द्वारा ध्यानावस्थित होकर विश्वनाथ में लीन हुये।

भिक्षान्नममृतं यत्र, कौपीनंयत्र मण्डनम्।
मरणं मंगलं यत्र, काशी केनोपमीयते ।।

डा० सुरेश्वर द्विवेदी

श्रीगणेशायनमः

नवरत्नावलीयम्

बालरत्नम्

निर्द्वन्दमद्वयं वेदवेद्यं दिव्यमुपास्महे ।
किंचिद् ब्रह्म यतो जातं सर्वाश्चर्यमयं जगत् ।।१।।

श्री मङ्गलाया मङ्गलमहं मङ्गलालयं मङ्गलदातारं जगदम्बा प्रलम्बबाहुधृतावलम्बं विघ्नौघविघातकम् ऋद्धिसिद्धि बीजितचारुचामरं सुचरितचरणचन्द्रचूडचित्तचायकं विनायकं साधकसिद्धिविधायकं निखिलनिलिम्पलोकप्रथमपूजितं सर्वैश्वर्यं सौन्दर्यंवर्यंसमूर्जितं बुद्धयधीशं षडाननानुजं महाभारतलेखकं सिन्धुर-सुन्दर-वदनं गुणगणसदनं, रत्नावलीरचितसुचारुनू-पुरसंन्वितचरणं कनककलितपीताम्बरधरं मणिगणरसनारसित कटितटम्, पीतोपवीतेन भ्राजमानं मुक्तावलीलोलोल्लसितोरस्थलं हीरककलितवलयविभूषितमणिबन्धं मधुमयमोदकभृतकरण्डकरं गणनायकं मूषकराजसेव्यमानं हेरम्बं स्वावलम्बं स्मारं-स्मारं मनसा वचसा मस्तकेन वारंवारं नतोऽस्मि ।

गीर्वाणप्रणयप्रपूजितपदो लम्बोदरः सुन्दरः ।
कर्णास्फालनदूरितालिपटली विघ्नौघमाबाधयन् ।

सानन्दामन्दमूलान्कुवलयकलिकामङ्गलार्थान् समर्थः
गौरीशंकरगौरवं प्रवलयञ्छ्रीलोकनाथो जयी ।।२।।

श्रीशारदां बुद्धिविशारदां सकल शास्त्रसारदां श्वेततमवसन् गन्धमाल्यालंकारललितां पुस्तकजपवट्हस्तां वीणावादन विस्फूर्जितोरस्कां सुमनसां मनोहारिणीं समस्तविद्याधारिणीं मति प्रसारिणीम् ब्रह्मलोकविहारिणीं कुमतिहारिणीं मातरं वाणीं नामं नामं स्वमानसमानयामि ।

वल्लकीरणनकौतुकशस्ता
दत्तदेवजनमस्तकहस्ता ।
शारदा विशदवस्त्रविभूषा
मद्धृदम्वुजविकासनपूषा ।।३।।

श्रीलानन्तब्रह्माण्डभाण्डमण्डलमण्डनं भक्तजनभवखण्डनं रुष्टदुष्टदण्डनं यमनियमशमदमध्यानधारणादिभिर्योगिजन हृदयकमलमारोहणीयं निखिललेखलोकलालितपदकमलं कमल-नयनं मीनादिरूपैरपि जगदुपकारकरं करुणापारावारं दीनदयालुं विध्यादिभिरपि स्तोतुमशक्यं वेदैरपि निःसंशयमवेदनीयं किं मया वेदितव्यं स्यात् किन्तु नामस्मरणमात्रकेण शरणमुपयामि ।

पंक्तिस्यन्दननन्दनः कुशिकभूभावप्रभावोज्वल
ऐशं शाङ्गमनीनमत्प्रणयिनीमानन्दयन्भूमिजाम् ।
त्रैलोक्याखिलजेतृरावणबलप्रध्वंसको राघवः
कौशल्यातनयो निलिम्पलघुतालोपी चिरं राजते ।।४।।

विद्यातपोभ्यां निर्मलान्तरात्मनो यस्य महर्षेः प्राचेतसः करुणा कुलचेतसः स्वच्छस्वान्ते स्वयमेवावततार वाग्देवी सरस्वती यश्च

ब्रह्मब्रह्मर्षिभ्यामुपदिष्टो रामचरित्रं चित्रं रचयामास । तं कवि-कुलकल्पनाप्रवर्तकं भूतभविष्यद्वेत्तारं महामुनिं नामं नामं स्मरामि ।

यदपाङ्गं किञ्च काव्यं नव्यं भव्यं बभूव भूलोके ।
तं मुनिवरमहमीडे वाल्मीकिं बोधबोधार्थम् ।।५।।

अथ च योहि मानवजनहिताय वेदान् विभज्य जयनामानं सत्यासत्यधर्माधर्मकर्माकर्मपरिजनकर्त्तव्याकर्त्तव्यराजनीतिधर्मनीति-मणिगणभरितं यत्र च सर्वं शास्त्रशिरोमणिभूतं त्रिलोक-गीतकीर्तिकं गीतामृतं विराजते । दुग्धाब्धिमिव महा, भारतं महाग्रन्थं प्रादुरभावयत् तं पुराणानां प्रणेतारं सत्यवतीसुतं द्वैपायनं वेदव्यासं सप्रेम प्रणमामि ।

पाराशरं ज्ञाननिधिं लोकालोकप्रदं नौमि ।
यश्च योगप्रभावेण पाण्डवान्समकल्पयत् ।।६।।

व्याकरणन्यायमीमांसादिप्रणेतारः श्रव्यद्रष्टव्यकाव्य भव्यलक्षणं कर्तारो ये च राजोपजीविनो विबुधास्तेऽपि सविनयं सततं नम्याः ।

ममसमंसमया भवन्ति ये
कवयस्तानपि सद्धिया समीडे ।
सुरनरभणिते विधायका
दयया तेऽत्र सुदर्शना भवेयुः ।।७।।
हसन्तु तुष्यन्तु वदन्तु किञ्चित्
ये प्राकृतास्तानपि पूजयामि ।

प्रदर्श्य दोषान्ममये कृतार्थाः
ममोपकारं हि यतो विदध्युः ॥८॥

अथ भारतवर्षस्य पूर्वोत्तरप्रदेशे वासिष्ठीसदानीरयोरन्तराले शरवारनामा प्रदेशः ब्राह्मणानां जनपदस्तत्र देवरिया मण्डलस्ये-शानकोणे नातिदूरे पकड़ी नामा ग्रामः कश्यपगोत्रिणां द्विवेदपद-भाजां भूसुराणां निवासभूतो विराजते। तस्मिन् कश्चिदनङ्गशर्मा कर्मयोगी ब्रह्मकर्मनिष्ठो गृही वभूव तस्य देवदत्त-त्रिवेणीदत्त—पूर्णदत्त-निरञ्जनदत्ताश्चेति चत्वारः पुत्रा वर्णाश्रमपुरुषार्था इव आसन्।

तेषु विदुषो देवदत्तस्य गोविन्दराम-नन्दरामेति तनयावभूताम्। तयोरधीतविद्यस्य गृह एव छात्रानध्यापयतो गोविन्दरामस्य श्यामकुमारीदेव्यां कृष्णाराम-कृतार्थरामौ वभूवतुः। कृष्णारामश्च महा वैयाकरणो वाग्मी स्वगृह एव विद्यार्थिनोऽध्यापयामास स्व-प्रान्ते प्रख्यातश्चाभूत्। तस्य वच्चूराम-कान्ता-रामौ परीक्षा देव्यां जज्ञतु।

वच्चूरामश्च स्वपितामहात्कौमुदीमधीत्य गोरक्षपुरं गत्वा सनातनधर्मोद्धारकर्त्तुः श्री-उमापतिशर्मणो द्विवेदस्यान्तेवासी भूत्वा व्याकरणन्यायावध्यैत। गुरुश्च तस्य मतिं प्रतिभाञ्चालोक्य सर्वशास्त्राणि ग्राह्यामास। अथ विद्यया लब्धख्यातिः पडरौना तम कुहीराज्ययोः सम्मानितो बहून्विपश्चितो विधाय भूमिं धनानि चार्जयित्वा सुखमास। तस्य शिवप्रसाद-चन्द्रभूषण-हरिहर-दत्तेति त्रयस्त्रिवर्गा इव सूनवोऽभूवन् द्वौ व्याकरणाचार्यौ हरिहरदत्तश्च ज्यौतिषपटुरभवन्। ततश्च पण्डित वच्चूरामः पुत्रेषु गृहभारं निक्षिप्य काशीमाजगाम अत्र विद्वन्मण्डले लब्धप्रतिष्ठः पञ्च वर्षाणि न्युष्य विश्वनाथसादभूत-पण्डित कान्तारामश्च भ्रातुरेव शास्त्राण्यधीत्य स्वकर्मनिष्ठो भूतिभूषितभालो रुद्राक्षमालालसित-

कण्ठः शिवमर्चयन् गृहकार्यरतस्तस्य शंकरप्रसादान्मर्यादादेव्यां सुतः संजातः। अथ वच्चूरामो भ्रातृजं सर्वाङ्गसुन्दरं सुलक्षणं शिशुं परिज्ञाय परमप्रमोदेन संस्कारान्कृतवान् उमापतिरिति नाम च चकार। कस्मिश्चित्काले काश्यामधीयानस्य स्वज्यायसः सुतस्य पार्श्वे तं प्रेषितवानध्येतुं स च तत्र वसन् व्याकरणन्यायादि समधीत्य महान्पटुरभवत्। काव्यकलाकौशलन्तु तस्य प्राकृतमेवास त्। तपस्विनो ब्रह्मचारिणो विद्यानुरागिणः श्री जगदानन्द-महात्मनः श्रीकुबेरनाथविद्यालये प्रधानाध्यापको भूत्वा छात्रान्पाठयामास यशचार्जयित्वा कालान्तरे तमकुही नरेशस्य राजसभापण्डितो वभूव। राज्ञा इन्द्रजितप्रतापशाहिना सह सर्वाणि तीर्थानि वभ्राम चतुर्णांधाम्नां यात्रां परिसमाप्य राज्ञे सर्वाणिपुराणानि श्रावयामास। तत्रावसर एव पारिजातहरणं नाम काव्यं प्रणिनाय। महाकाव्येनाने महद्यशः प्रसृतम्। धनपुत्रादि समर्ज्य गृहाश्रम-सुखमनुभूय काशीमागतो निर्माप्य कविपतिकुटीरं न्युवास। काशी विद्वत्परिषदाभि नन्दितः प्राप्तप्रतिष्ठोऽत्रापि वहूञ्छात्रान्पाठयामासैवससुखं वसन्नात्यन्तिककाशीवासं प्राप।

श्यामराजीदेवीतनूजन्मा शिवप्रसादश्च तमकुही पडरौना राज्ययोः सम्मानितस्तत्र तत्र वहून् विद्यार्थिनोऽध्याप्य पञ्चत्रिंशद्वर्षाणि सुजनैः स्वजनैश्चसह परामर्शं कृत्वा वाराणसीमागत्य असीसङ्गमतीर्थपार्श्वे निजमण्डपिकायां वर्त्तमानोऽपि छात्रानध्यापयन् विश्वनाथगङ्गयोः कृपामीहमानः सुखेन वसति। भक्तप्रिय ईश्वरः स्वभक्तभक्तान्प्रति स्वभक्तिं प्रयोजयति ततः परमेश्वरप्रवणमनसां सुमनसां साधूनां चरित्रं चरितव्यं रचितव्यञ्चेति समालोचयन् स्वमसथं जानन्नपि प्राचीन प्रणालीमवगत्य प्रक्रमते शिवप्रसादः शिवप्रसादं समासादितुम्।

भारतवर्षं हि पृथिव्यां महन्महनीयमिति देवैरपि गीयते तत्र-चोत्तारप्रदेशो रामकृष्णप्रभृतीनामवतारभूमित्वात् प्रशस्ततरमिति किम्वक्तव्यमेवं भगद्भक्तानां महर्षीणां निवासभूतो भगवद्राम-पदपद्मपवित्रितचित्रकूटसुशोभितो मध्यप्रदेशोऽपि महत्वमावहति। प्रसिद्ध बाँदामण्डलान्तरगतो राजपुरनामा ग्रामः सुपथ चत्वर पुष्पोद्यानदिकर्निर्मितमन्दरायमाणमन्दिरैरुपशोभितो नाना गण्यपण्यवस्तुजातवीथीसमुदायलसितः सुजनविद्वज्जनकलाकारवीर-पुरुषैश्वाधिष्टितः पथिकजनाह्लादकरः कालिन्दी कल्लोलोल्लसित तट निविष्टः फुल्लत्कह्लारकुलपरागसुगन्धिसमीरसेवितो विराजते —

यदन्ते विद्यन्ते तरणितनया तीरतरवः,
प्रफुल्लत्पुष्पाढ्या-प्रसभमरुदान्दोलितलताः ।
नदीनीरप्रोद्यत्कणनिकरशीतान्तरतला
जनैः संसेव्यन्ते यम नियम कार्यार्थकुशलैः ॥९॥

अनेके कालिन्दीपुलिनकृतवासाः सुमनसः
समीहन्ते योगैर्हरिपदसरोजं स्वहृदये।
स्थिरं कर्तुं केचितव्रतशमतपोदानकुशलाः
परे पापं तापं शमयितुमलं कर्मनिरताः ॥१०॥

चलन्ती चाञ्चल्योल्लसितकल्लोललसिता
सरोजालीपालीश्रितसितमराली रविसुता।
प्रयागीयां शोभामुपनयति राजापुरकृते
इतीत्थं ग्रामोऽसौ बहुविधसुपुण्यैकनिलयः ॥११॥

कलिन्दनन्दिनीनन्दनन्दनेनानुमोदिता ।
गन्धपुष्पागरुफलैर्रचिता सर्वशर्मदा ॥१२॥

राजापुरग्रामनिवासिनो जना
निषेवणात्साधु यमानुजायाः ।
सुवण-दुर्वर्ण-धनादिपूर्णाः
त्रिवर्ग-सम्पत्तियुता रमन्ते ॥१३॥

अत्र सुवर्णदुर्वर्णविशिष्टसुवर्णदुर्वर्णजननिवासभूते स्थाने द्विजमण्डले गोत्रेण पाराशर उपाधिना द्विवेद आत्मारामशर्मा वभूव तस्य सहधर्मिणो श्रीतुलसी सेवनशीला हुलसीनाम्नी रमणीया रमणी चा भवत् । स्वधर्मानुसारमाचारमाचरतोः सुखेन कालो यातिस्म । अथ पतिसेवनधर्मवतीगृहकर्मदक्षा दयाशीलादिगुण-गणविशिष्टा सा ब्राह्मणी गुर्विणी जाता तज्ज्ञात्वा तस्याः पतिः प्रसन्नो दोहदादोन्तदिच्छानुकूलान्सम्पादयामास–

पत्युः प्रयत्नाद्विविधैः पदार्थै
स्ससारसर्वावयवा रराज ।
सखीभिरत्यन्तमुपासिता सती
नगर्भभारक्लममाप भूसुरी ॥१४॥
कार्श्यालसत्वं शिथिलत्वमागता
सेवाविहीनापि पतिप्रियाऽभवत् ।
देवद्विजातीन्सपूजयद् द्विजो
भवेत्पितृणस्य समापकः सुत ।१५॥

एवंपातिनि समये चतुःपञ्चाशदुत्तरपञ्चदशशततमे वैक्रमाब्दे नभसि शुक्लदले सप्तम्यां सायं मूलाद्यपादे सुतं प्रासोष्ट हुलसादेवी । जातमात्रः शिशुर्नाऽरोदीत् प्रत्युत राम इत्युच्चचार मुखेच तस्य सर्वे दन्ता आसन् भविष्यन्महतां जनिश्च सविस्मया अप्रतर्क्या च प्रायो भवति, किन्तु पिता साश्चर्यं सुत जन्माकर्ण्य संशयाकुलो जातः किमेवं जातो वालः किमप्यनिष्टं दर्शयिष्यति । तत स्व-

बन्धून्समाहूय परामर्शं चक्रे तेऽपि सन्दिहाना ऊचुः स्वयंमृतश्चेत् न किमपि कर्त्तव्यं यदि च जीवेद्वने विसर्जनीयः इति श्रुत्वा प्रसूता मातृस्नेह विह्वला कथं शिशुः सुरक्षितोभवेदिति चिन्ताचणा शुशोच। तदेवं व्यतिकरे दासीं चुनिया (मुनिया) नाम्नीमाहूय तां प्रोवाच प्रिये त्वमिमं शिशुमादाय स्वश्वशुरपुरं याहि पालयैन-मन्यथा गृहस्वामो वने विसर्जयिष्यिति श्रुत्वेतत् दयापरवशा तदुक्तिमङ्गीकृतवती ततो हुलसी देवी स्वान्याभरणानि दत्वा वालं तस्यै समर्पितवती। चुनिया च वालं स्वसुतनिर्विशेषं तमादाय श्वशुरालयं गता सर्वभावेन पुपोष नवजातं शिशुम् उद्वर्त्तनतैलपयः प्रदानादिभिः शिशुश्च शुक्लपक्षशशीव ववृधे रामवोला इति नाम्ना प्रसिद्धो वभूव। इतश्च वालजननो ज्वराक्रान्तैकादश्यां नाम शेषाऽभवत् वालश्च मुनियाकृतसम्वर्धनोपायैरेधमानो धिया शरीरेण हृष्टः पुष्टश्च वालैः सह क्रीडन् पञ्चषष्ठिमासिको जातः। दैवदुर्विपाकात् चुनिया काकोदरदंशात् कालवशं गतवती रामवोला अनथो वभूव। किन्तु ग्रामसज्जना दयालवो भोजनाच्छादनादिना तं पुपुषुः। सम्बाऽञ्च तत्पितुः पार्श्वे प्रेषितवन्तो यत् रत्न भूतोऽयं वालो रामवोला, भवानेन नयतु किन्तु द्विवेद आत्मारामो नाश्वस्तोऽभवत् कथयामास च राक्षसं समानोय नात्मविनाशं कारयिष्यामि। ततोग्रामजनाः अनाथो वालो रक्षणीय इति वस्त्रान्नपानादिभिः पालयन्तिस्म रामवोला सदा प्रसन्नः वाल्य-एव प्रत्युत्पन्नमतिर्भगवद्भजनलग्नस्साधुजनं प्रोतिकरश्चाभवत्। कदाचिद्रात्रौ स्वप्नं ददर्श यद्रामो भगवान् कथयति—

तनय तव चरित्रं रामचिन्तापवित्रं
हतपतितजनार्त्तिं भञ्जयञ्जीव लोके।
अविरतमुपकर्त्तुं जायतामित्यवादीत्
प्रभुरथ हृदयाब्जं फुल्लितं वालकस्य ॥१६॥

यतिरत्नम्

स्वप्ने रामप्रोक्तवाचं समाज्ञां
बालो चित्तेऽचिन्तयच्चारु चित्रम् ।
देवो दैन्यं दुर्गतिञ्चापि देयात्
तस्मात्तस्मिन्मे मनो निश्चलं स्यात् ।।१।।

तदनु रामबोला निराश्रयोऽपि संतोषमनुभवन्समयं समापयामास । एकस्मिन्नहनि दण्ड कमण्डलुधारो कोऽपि महात्मा तत्र ग्रामे समायातः । एकस्यगृहिणो द्वारदेशे सुच्छायं चलदलपादपं कूपमप्यालोक्य वृक्षतले सम्बलं संस्थाप्योपविष्टः ततो बाबा नरहर्य्या नन्दः समायात इति ग्रामीणा वदन्तस्तमधिगम्य-प्रणमन्तिस्म रामबोला अपि तदानीं तत्र—

पिङ्गोत्तुङ्गजटाजालं बिभ्रतं भूतिभूषितम् ।
सुललाट मुनिं दृष्ट्वा बालो दण्डवदानतः । २।।

सर्वेभ्यः शुभाशिषं ब्रुवाणो जनानां सौविध्यविधानेन स्वागतेन च प्रसन्नो महात्मा सर्वान् मधुरया वाचा समभाजयत् । कोऽयं बाल इति तानप्राक्षीत् तेषु कश्चित्सुजनो जन्मतः प्रभृति रामबोला-बालकस्य सर्वं वृत्तान्तमचकथत् । अथ च पूजनीयमतिथिं सत् पुरुषा आसनाशनाच्छादनैः सत्कृतवन्तो योगी च स्वनियमान वर्त्तयन् तावद्रजनीप्रथमयामो ययौ मार्गश्रान्ततया सुखं सुष्वाप । प्रातः प्रबुद्धो यतिर्भगवत्स्मरण कृत्वा नित्यनियमान् विधाय ध्यानावस्थितोऽभूत् तत्र च तस्य प्रतिभातं यत् योऽयं विश्वबल-

लाटो दीर्घोन्नतघोणो मनोहरोर्णकोऽधरीकृतगजोवनयनो विम्वाधरोष्टो दर्पणोदरसुन्दरकपोलो विशदनारङ्गकाकारहनुः कम्बुकण्ठो विस्तृतवक्षाः प्रलम्बवाहुर्गभीरनाभिः करिकराकारोर्वादिपादभागः केशरिकटिर्वालस्तं त्वं पालय तव यशोराशिर्भविष्यति इति रामः समादिशति अथ साधु साधु इत्याघोषयन्तः सर्वे जनाऊचुः वालस्यास्य महद् भाग्यं यदेनं भवाननुगृह्णाति ततो ग्रामसुजना वाल स्नापयित्वा वस्त्रैराच्छाद्य मधुरभोज्यानि भोजयित्वा महात्मने समर्पयामासुः महात्मानमपि भोजितवन्तः। स च योगी पङ्केपतितं रत्नमिव तं वालमादाय सर्वैश्चवन्दितौ यतिः कोमलकान्तिना वालेन सह गन्तुं प्रवृत्तः श्रीरामराजधानीमयोध्यां गन्तुमना पूर्वं प्रयागमुद्दिश्य चलितः–

ततो व्रजन्वाल वलानुरुपं-
शनैः शनैर्भूतहितो महात्मा
विश्रम्य-विश्रम्य जनस्थलेषु
साकेतमुद्दिश्य शिशोः प्रियार्थम् ॥३॥

गतोऽथतीर्थाधिपतिं त्रिवेण्यां
स्नात्वाथ सन्ध्याय पितॄनतार्प्सीत्।
संस्नाप्य वालं व्रजतिस्म देवान्
द्रष्टुं यथा स्थानगतान्सयोगी ॥४॥

तुष्टाव तुष्टो द्युनदीं कृताञ्जलिः
प्रोद्यत्तरङ्गां जलपक्षिकूजिताम्।
कह्लारकोशप्रसरत्पराग—
पिङ्गीकृतां नीलसरोजजुष्टाम् ॥ ॥

हनूमतोऽग्रे रघुनन्दमस्य—
पश्चाच्चलल्लक्ष्मणकान्तिमत्र
दधाति गङ्गा सुरलोकदात्री
सरस्वती-सूर्यसुता-विभिन्ना ॥६॥

मातस्त्वदीयं महिमानमेतं
वक्तुं वशे कस्य सुधासुधारे।
महाक्रतुध्यानतपः प्रदानैः
सुदुर्लभ विष्णुपदं ददासि ॥७॥

नमामि मातर्हृदयेन मूर्ध्ना
वाचा च साष्टाङ्गमहं मदीयं
तापत्रयं संहर शान्तिरास्तां
न सीदति त्वच्चरणोपसेवी ॥८॥

इत्थं संस्तूय तत्रत्यानक्षयवटादीन् देवान् दर्शं-दर्शं भारद्वाजाश्रमे निशां नीत्वा अरुणायमाने दिक्चक्रवाले शनैः शनैः पतत्रिणामारावैश्चोरजारादिवत्पलायमानेऽन्धतमसि दिनराजभयात् निर्गच्छत्सु खललोकखगकुलेषु गगनखलात् रामवोलापालकपिता योगी कल्यकालिकानि कृत्यानि कृत्वा बालमपि संस्नाप्य चलितः।

मातः स्मृता स्मारबलं निहंसि
पापप्रतापंच मनोऽनुतापम्।
नामग्रहाद् ग्राहफलं च दृष्टा
विगाहनाद् विष्णुपदं ददासि ॥९॥

जननि जननमेतज्जायतां ज्योतिषा ते
जनिमृतिकृतिहीनं दैन्य दैन्यं मदीयम्।

अविरतिरतिरास्तां त्वत्पदाम्भोजयुग्मे
नहि शरणमिहास्ते त्वत्पदाम्भोजभिन्नम् ।।१०।

नुत्वा विष्णुपदीं तीर्त्वा रामबोलासमन्वितः ।
तमसावृतचित्तानां तमोघ्नीं तमसामपि ।।११।।

स्तुत्वा वशी समुल्लङ्घ्य वाशिष्ठीतां रमाययौ
मनसात्संप्रसूताात्वं साकेतपुरशोभिता ।।१२।।

हरसे कलिकालुष्यं कुरुषे पुण्यभाजनम्
सर्वंलोकमिति ज्ञात्वा नमामि भवतीमहम् ।।१३।।

सरयूं नत्वा तत्र स्नात्वा नित्यविधिं विधाय रामराजधान्या अयोध्यायाः स्वरुत्पतितुकामायाइव स्वच्छमणिमयमन्दिराणि सप्तभूमानि प्रभोच्छ्वासैर्गगनमपि भवनभरितं भावयन्ति तदुपरि गच्छन्ति प्रतीयन्ते । वामदक्षिणयो राजपथस्य स्फटिकमयस्य निविष्टानि मध्येमध्ये चतुष्पथनिकटस्थानि नन्दनवनस्य दर्पापहारीणि वनान्युपवनानि दर्शं-दर्शं बालं च दर्शयन् श्रीमद्धनुमन्मन्दिरसमीपमुपजगाम । तन्निकट एव केनचिन्मठाधीशेन प्राप्तानुमतिः भवनैकदेशे कोटरे सम्बलानि रक्षित्वा मठाधीशं च सम्बोध्य मारुतिमन्दिरमागत्यान्तःप्रविश्य–

वज्राङ्गां लोहितां मूर्तिं गदाहस्तं सुवालधिम् ।
स्फुरद्बाहुरवालोक्य शुभाशंसी ननामताम् ।।१४।।

अदृष्टपूर्वां तां दृष्ट्वा रामबोलापि बालकः ।
पादाश्रयोस्तु मूर्धानं दत्वा दत्वा नतोऽभवत् ।१५।।

हनूमतश्च तस्मिन्बाले विशिष्टा प्रसन्नता जाता तन्मस्तकोपरिकुसुमनिकरं प्रववर्ष, तथा च बालस्यापि प्रहर्षा नात्मनि ममे । सनीरे नयने शरीरञ्च कंटकितमित्त तस्यालोक्य तद्गुरुरपि

वहु तुतोष। तस्य भक्तिरसगुणान् दृष्ट्वा प्रशसंस ततश्च सपर्यां समाप्य प्रसादञ्चादाय स्थानमागतौ। किञ्चिदशनमशित्वा विश्रमतुः। अन्यस्मिन्नहनि विद्वांसो वैदिकास्तेन महात्मना समाहूता -स्तेषामादेशानुसारं सम्पाद्य यज्ञविधिना सरयूतटे विपिने वालस्योपवीतसंस्कारम् एकरसोत्तरपञ्चदश शततमे वैक्रमेऽब्दे माघशुक्लपञ्चम्यां भृगुवासरे पूर्वलुप्तसंस्काराणां प्रायश्चित्तञ्चा कारयत्। तुलसी सेविका जातस्य तुलसीसमानयनरोपणसेवनादि कुर्वतो ब्रह्मचारिणोनाम तुलसीदास इतिचकार। अथ संस्कारप्राप्त ब्रह्मतेजाः कृष्णाजिनी मुञ्जमेखलीपालाशाषाढी सर्वान्विप्रजनान् ववन्दे। शुभाशीषञ्च लब्ध्वा प्रतिदिनं समिधानयनं बिदधत्संध्याय न्ननग्निं परिचरन् गुरुशुश्रूषुर्दिव्यरूपो वभूव। अथ वर्णपरिचय-पूर्वकं कर्मयोग्यान्मन्त्रानधीयानं ब्रह्मचारिणं शब्दपदवाक्य वाक्यार्थवोधाय व्याकरणमध्यापयितुमारभत स महात्मा। एवं दशमासान् रामराजधान्यां व्यतीत्य मन्दं मन्दं मन्दायमाने भास्कर गभस्तिजाले शनैः शनैः शीतगुणे वर्धमाने हेमन्ते समायाते वालेन सह घर्घरा-सरयू-संगम तटे स्थितं प्राचीनं पुण्यतमं सूकरक्षेत्रं समाजगामासौ यतिः। यत्राद्यापि वार्षिकी मेला प्रचलति तत्रा-श्वत्थवटप्लक्षपनसाम्रजम्बूपारिभद्रशालतमालखर्जूरशाखोटक काञ्चनारादिपादपैः शोभिते भूभागे पर्णकुटीरं परिरच्यन्युवास। ब्रह्मचारी तत्परिसरे वृन्दावनं श्रीबृक्षवनं चम्पकविचकिलकर्णिकार करवीरस्थलपद्मपाटलादिवाटिकाश्चसमारोपयत्। केदारनिर्माण पूर्वकं सायं प्रातः सरयूसलिलैः परिसिञ्चन् वर्धयामास तद्गुरुर्मुनिरपि सुरभिसुन्दरसमीररमणीये प्रदेशे ससुखं वर्तमानः परम मोदमवाप। अथ च सम्वोधनीयं वालं वुध्वा रामायणीं कथां कथयितुमारेभे। वटुश्च श्राव-श्रावं मनसावदधाति तत्रान्येऽपि श्रोतारस्तुष्यन्ति। प्रतिरविवारं जनपदात् समायाताः स्नानार्थिनो

जनाः सपरिजनाः कलितकमनीयं विकसितकरवीरकुलजपाकुसुम केतक्यादिशोभाढ्यं सघनमहीरुहच्छायं विविक्तं पूतं प्रदेशमधिष्टाय मुनिवरं नत्वा कस्यचित्पादपस्य तले वस्तुनि निधाय सारसहँस-कारण्डवचक्रवाकवकहेवाकचलत्वञ्चलचारुतां नृत्यत् कह्लार कमलराजीवश्वेताम्बुजस्वर्णाम्बुजां परितो मधुमत्तमिलिन्दमधुर-रावझङ्कारैरुपलक्षितोत्तालतरङ्गरिङ्गणरमणीयतां पश्यन्तः सम्मद-परवशा भवन्तो नद्यामुत्तारन्ति। तत्र तेषामपि मुखानि कोमल-कमलान्तर्गतानि व्याहरण व्यवहारैरेव लक्षितानि भवन्ति। परस्परं सिञ्चन्तः करयन्त्रै र्जलमुच्छालयन्तोः ननाविधप्लवनकलां कुर्वन्तोऽभिषेकं परिसमाप्य वहिरेत्य वासांसि स्वानि-स्वानि परिधाय वृद्धा युवानो वालाश्च तत्रत्यं कर्म कृत्वा पूर्वाधिष्ठित माश्रममागत्य स्वामिनं ब्रह्मचारिणश्चान्नवस्त्रादिभिरर्चयन्ति। कथाञ्चश्रुत्वा स्ववासं यान्ति।

सकलनिगमधर्मध्यानधूतापराधः
सदयहृदययोगं वालके योजयन्सन्।
तपसि निरतचेताश्चन्द्रचूडानुकम्पा
मनुसरति महात्मा मानवानां शुभेच्छुः॥ १६॥

वाशिष्ठी घर्षरायोगे योगेनात्मानमेधितुम्
वालश्चापि तथाकर्त्तुं यत्नवान्स महामुनिः॥१७॥

तस्य च शरीरं तपसः कोष कर्मणामाधारः धर्माणां सामञ्ज-स्यं दयाया निधानं सौजन्यस्य द्वारं कल्मषस्य कालः कालनियम-स्य कूलं स्नेहस्यागारः उपकाराणां पादपः मङ्गलस्य मन्दिरं भक्तिलताया मूलं मानवताया मूर्त्तिः किम्बहुना सकलगुणगणालयः यतिरत्नम् एवं वाणवर्षाणि तत्राषित्वा विश्वनाथपुरी गन्तुमियेष। तत्रत्यान्मुनीनापृच्छय साधुवादान् लब्ध्वा ज्ञानप्रकाशीं काशी

विश्वनाथञ्च स्मरन्प्रस्थितः। मध्ये-मध्ये च ग्रामग्रामटिकावन-वाटिकापुस्करमन्दिरादि पश्यन् वहुप्रयाणकैः शनैः शनैः समीप मानन्दवनस्याससाद। प्रथमं देहलीविनायकं दृष्ट्वा वरिवसित्वा स्तुत्वा नत्वा नगरं प्रविवेश। वटुना सह पुरागारिश्र्तां नाकलो-कतोऽत्यधिकसौन्दर्योदार्यादिमर्यादाभूमिं भवनभूतिभूपाध्वचतु-स्पथसुमनोवाटिकादिशोभितां काशिकां पश्यन् गंगातटनिकटस्थ-मन्दिरमेकमवाप यत्र महात्मा रामानन्दस्तिष्ठति तत्र पार्श्वं एव शेषसनातन नामा महान् विद्वान् निवसति। तमपि मिलित्वा गृहै-कदेशे वसनासनादि रक्षितवान्। ततस्तोर्थंविधिमुपवासादि कुर्वन् नाकनदी सुधासाररसभरितां तटगतनानातरुलतागुल्मादिवहुविध कुसुमसमुदायशोभितां नर नारिसमर्चितां विविधशकुनि कुलकलक-ण्ठकूजनरमणीयां पद्म-सद्मभूतां मिलिन्द मण्डलमधुरगभीरगुञ्जन-जनितप्रमोदां शफरीस्फुरणमकरादिगणरिङ्गणगर्भां ननाम। तुलसीदासमपि नमयामास ततः पुण्यौघ विस्तारकैर्मन्दाकिनोनीर-कणैः शिर आसिच्याचम्य च तुष्टाव—

देवाधिदेवपदपद्मसुधाप्रवाहां
पद्मास्तनत्रुटितहीरकहारशोभाम्।
चन्द्राश्मचन्द्रकरज द्रवपूरपूर्णां
गङ्गां नमामि हिमशैलरसावघूर्णाम् ॥१८॥
मदाम्बके त्वदन्तिके समागतेन यन्मया
पदे-पदेसमर्जितं ह्यघौघघस्मरे शुभम्।
ततोऽतिलोभलम्पटेन पादघात एष मे
कृतेः क्षमस्व तं तरङ्गिणि त्वदङ्कके शुभे ॥१९॥

ततो मुसलवन्नत्वा धारां प्रविवेश यथाविधि सस्नौ। तत्रैव संध्यातर्पणे च विधाय ब्रह्मार्पणं कृत्वा वहिरेत्य वाससी

परिहिते ब्रह्मचारी च तमनुचकार। अथ द्विमुखं कमण्डलुं सुरसरिन्नीरभरितं (कृत्वा) सपर्योपचारञ्चादाय वालेन सह चचाल। पूजनीय देवानां समीपं प्रथमं ढुण्ढिराजनामानं गणपतिमुपगम्य शुभोपचारैरर्चयन् नुनाव च–

गिरीन्द्रनन्दिनीनंदनंदनं नागधारिणम्
दंत्याननं चैकदन्तं देवंदीर्घोदरं नुमः ॥२०॥
अम्बिका क्रोड कायेन शुण्डादण्डविडम्बनात्
कपर्दिनः कचाक्रान्ति कुर्वता वाललीलया ॥२१॥
प्रसादसुमुखौ जातौ जननीजनकावुभौ।
एवं विनोदिनं लोककल्याणैकनिधिं भजे ॥२२॥
गुरुणैवं कृतामर्चां संचित्य चरणामृतम्
शिरस्याधाय पीत्वा च वालोऽपि मुमुदेतराम ॥२३॥
न्यूनाधिक्यं क्षमाप्यैव यतिराजो जगामह
जनन्या अन्नपूर्णाया मन्दिरं मन्दरोपमम् ॥२४॥
तोरणद्वारि प्रघणे मुण्डं दत्वा विवेश च
सभामण्डपमागत्य मातुः सम्मुखमागतः ॥२५॥
पपात दण्डवद्भूमौ ध्यायं ध्यायं पदाम्वुजम्
तमायातं नमन्तञ्च भेजभक्तिः प्रभाविता ॥२६॥

तत उत्थाय उपचारघटकटकाकटं विघट्य्य यथास्थानं संस्थाप्य तुष्टाव–

भिक्षान्नमादाय समस्तलोकान्
विभर्षिमातः सदया सदैव।
श्री विश्वनाथोऽपि तव प्रतीक्षां
करोति भिक्षार्थमितित्वदर्थम् ॥२७॥

किंकोहि कुर्यादिति संशयोमे
लोलुप्यतेतें करुणांसमीक्ष्य
ततोऽतिदीनस्य जलंफलंवा
गृहाणमातः किलवालबुद्धेः ॥२८॥

एवं विनयं विधाय जलपञ्चामृतजलं वसनाष्टगन्धाक्षत पुष्प मालूरपत्रागरु धूपदीपनैवेद्य ताम्बूल फलदक्षिणादिभिरन्नपूर्णां परिपूज्य प्राञ्जलिरस्तौषीत्–

पद्मासनेन कमलाश्रय माश्रयन्ती
दिग्दन्तिहस्तधृत कुम्भसुधा प्रवाहैः।
स्नातीं हरप्रणयरूपधरां कराब्जां
देवीं भजामि भव भीति हरांपराख्याम् ॥२९॥

सुवर्ण कुसुमाक्रान्तां पद्मरागदलात्मिकाम्।
चाक चक्य करींशाटीं जनन्याः संस्मरामहे ॥३०॥

पद्मपत्रोपरिलसत्हिम बिन्दु समाकृति।
दिङ्नरवं पादयोर्मातुर्दर्शं-दर्शं द्युतिलभे ॥३१॥

सुवर्ण मण्यलङ्कार वन्धरीति मनोहरौ
सुश्लोक चरणौ देव्या वुध वोध्यौनमाम्यहम् ॥३२॥

हंसको पासितौ प्रेयप्रदौ श्रेयस्करावपि
नारिकेल समुद्गाभौ गुल्फौ देव्याः स्मरामहे ॥३३॥

हेमरवट्वाङ्ग सुभगे विश्व कर्म कलातिगे।
रोहावरोह शोभाढ्ये जङ्घे विद्वन्द्यतांगते ॥३४॥

मनोज पल्यङ्कपदोर्मस्तमाने मनोहरे।
जननी जानुनी जैत्रे सौन्दर्यस्य यजामहे ॥३५॥

वर्णमार्दव मादाय चम्पकस्य विनिर्मितम्
करिशुण्ड द्वयाकारं देव्यूरु युगलं नुमः ॥३६॥

ब्रह्म वत्संशयापन्नं रसनोपनिषत्स्फुटम् ।
ज्ञान विज्ञान संवेद्यं मातुर्मध्यंनमाम्यहम् ॥३७॥

स्वर्णदी स्वर्णसोपानसदृशं त्रिवलीवलम् ।
शोभाया मन्दिरं मातु रुदरं प्रणमाम्यहम् ॥३८॥

शोभायाः सरितो मध्ये शुभावर्त्त सुशोभिताम् ।
गम्भीर नाभि भूतेश्या भवभीतिहरां भजे ॥३९॥

गम्भीर कूपान्निर्गत्य फणिनीशैलयोरधः ।
प्रवशिन्तीववेमातू रोम राजीर्विराजते ॥४०॥

शम्भुमूर्तिद्वयोपेत मुभ कैलाशवत्स्थितम् ।
वक्षोजयुगलं देव्याजीवनं जगतो नुमः ॥४१॥

विकसत्कोश कमल कान्ति कोमलताहितौ ।
कर्णिका हेममुद्राढ्यौ करौ शुभकरौ नुमः ॥४२॥

क्वणत्कंकण रत्नाली प्रभाशक्र धनुः प्रभम्
मणिवन्धयुगं देव्यां मनसा परिचिन्तये ॥४३॥

सुवर्ण वेणु सद्ग्रन्थि स्वच्छा कारौचकूर्परौ ।
करुणा कोशकीलाभौ भगवत्या भजाम्यहम् ॥४४॥

मृणाल कोमलौस्फीतौ लवलीशाखिकोपमौ ।
माणिक्याङ्गद दत्ताभौ भुजौ भक्त्या भजामहे ॥४५॥

मांसलावंसकौमातुर्हीरहार लता लसौ ।
वाहुमूले स्त्रंसमानौध्येयौ विधिमनोरथौ ॥४६॥

सौकुमार्यसमापन्न शङ्खसादृश्य शोभनम् ।
हेममौक्तिक मालाढ्यं कण्ठं कल्याणदं नुमः ॥४७॥

मुनिपुष्प समाकारं भवेन्नारंगकं यदि
तत्तुल्यं चिबुकं मातुर्महनियं नतोऽस्म्यहम् ।।४८।।

वन्धूककुसुमा भासौ पद्मपत्र समाकृती ।
मातुरोष्ठौ सुधा ज्येष्ठौ प्रेष्ठौ शम्भोर्भजामहे ।।४९।।

सौवर्णं कुसुमं चेत्स्यात्तिलस्यानम्र मुन्नतम् ।
तत्तुल्यां जननीनासामाम्नापूरां समर्चये ।।५०।।

निष्कलंकविधु स्वच्छ सन्ध्या रागोपशोभितम् ।
मातुः कपोलयुगलं काम्यं कामनया नुमः ।।५१।।

मत्स्यावास्ये समाश्लिष्य स्थितौ स्यातां यदातदा ।
नयने नयनेत्रे च भूयास्तां मम मानदे ।।५२।।

इन्द्रनील कृतेशाङ्गे क्रमशः स्थापिते यदा ।
मनोरमेभ्रुवौ मातुर्भासुरे भूरिभावये ।।५३।।

हेम पट्टार्धचन्द्राभं कस्तूरा तिलकाञ्चितम्
ललाटं जगदम्बाया भक्तानुग्रहकं भजे ।।५४।।

मिलिन्द माला मेघाली मयूरावर्हिमेलनम् ।
मातुः कबरीकापाशं ध्यायं ध्यायं विमुच्यते ।।५५।।

सुधां सौधाकरीं पातुं मुद्गीर्णं मणि नागराट् ।
चूडा मणि र्भाल मूले भवान्याभाति भूतिदा ।।५६।।

वैकुण्ठे श्रीरसि सुनयने ब्रह्म लोके तु वाणी ।
इन्द्राणीवाशतमखपुरे वारि राजस्य राज्ञी ।।
कैलासे त्वंहिमगिरि सुता सूर्य लोकेतुसंज्ञा ।
यत्यत्तेजोभवति सदये सर्वं मेव त्वमेव ।।५७।।

एकत्वमेव सरले पुरसुदनस्य ।
त्रैगुण्यतोविरहितस्य महेश्वरस्य ।।

चेतो हरा विविधरुप बिधापयित्री ।
पादाब्जयो स्तव भवानि भवानि भृङ्गः ॥५८॥

अम्बत्वदाश्रय मवाप्य निरन्जनानि ।
दृश्यानि लोक निवहैर्नलिनी दलानी ॥

ये भक्ति भाव विभवा भवतीं भजन्ते ।
तेषांहृदब्जममलं नितरां विभूयात् ॥५६॥

केवलं स्तोत्रमेवैतज्जगदीश्या जपञ्जनः ।
वैभवं वैभवे तस्य सुरलोक समीहितम् ॥६०॥

एवं स्तुत्वा नत्वा व्रह्मापणं करोतिस्म योगी । व्रह्मचारि तु तत्सपर्यां निरीक्षमाणः कासामग्री कोविधिः कश्चक्रम कानि वस्तूनि देयानिति मन्यमानोध्यानावस्थितः प्रणतोऽनुभवतिस्म । यन्मातेव माता क्रोडे कृत्वा स्तनन्धयमांशिरसिस्पृशति ततो जातरोमोद्गमो हर्षातिरेकान्ननाम । अथ मातृ स्मरण पूर्वकं गुरुः प्रदक्षिण क्रमेणवहिर्निसृत्य देहलीं नत्वाविश्वनाथा भिमुखंययौ । रामवोला च तमनुजगाम । वीथ्यां वामपार्श्वे पण्यस्थाने सुविक्रय्याणि वहु प्रकाराणि पूजा-पत्राणि भस्म चन्दन वटिकाः कुशकौशियोर्णा सनानि चित्रविचित्राणि वर्हंव्यजनानि शालग्रामनार्मदलिङ्गानि च विलोकयन्साश्चर्यं काशीमहिमानं वुवुधे । गुरुश्च मध्ये मारुति-मक्षयबटं भास्करिञ्च पञ्चोप चारैर्भावयन् भगवद्विश्वनाथ मन्दिर द्वार मागतः प्रघणेमूर्घानन्दत्वा प्रविवेश । प्राङ्गण मागत्यविविध विचित्रं कनकमय मन्दिर शिखरं निर्निमेषनयनोनिरीक्षतेस्म नमति च ततः पश्चिमद्वारि स्थितंमहादेवं पश्यन् नरसम्मर्दमये-ऽन्तराले शनैः शनैः विश्वनाथ समीप मुपस्थितो भष्म भूषित-ललाटकण्ठवाहूमूलमध्यमणिवन्धेन रुद्राक्षमालाभिर्वलयितग्रीवीरः करेण व्रह्मचारिणा सहपूजा भाण्डानि विविधोपचारभृतानि निधाय भगवन्तं नत्वादद्यौ करौवध्वा–

चन्द्रप्रभं चन्द्रचूडंचण्डी चेलाञ्चलाञ्चितम्
व्याघ्रचर्माम्बरंव्यालमालं धूर्जटि माह्वये ॥६१॥

ससैन्धव समोष्णं च नाना गन्धसमन्वितम्
पादप्रक्षालनार्थाय पानीयं प्रददाम्यहम् ॥६२॥

र्वाहद् वासुमाढ्योऽयं फलगन्ध जलान्वितः
अर्घ्यस्ते हस्तयोर्दत्तोगृह्यतां परमेश्वर ॥६३॥

कर्पूरपूरितं गाङ्गं शीतं गुण मयंतथा
दत्तमाचम्यतां देवप्रसीद सुमुखोभव ॥६४॥

क्रमशोदुग्धदधिमध्वाज्य सिताभिरभिषिच्य तीर्थोदकेन संस्नाप्य प्रक्षाल्य वाससीपरिधाप्योपवीतं दत्वा अष्टगन्धेनानुलिप्य शुभाक्षतानुपरिविकीर्य वकुल विचकिल करवीर कर्णिकार पाटला-शेफालिकामन्दार धुस्तुर कुसुमानि शिरसिसमर्प्यं त्रिदलानि कोमलानि मालूर दलानि चापिडीकृतानि दशाङ्ग धूप धूपनोत्थ सौरभं पात्रं भ्रामयित्वा सचन्द्रं चतुर्वर्त्तिकं दीपं दर्शयतिस्म। माधुर्यभाञ्जि मोदकादीनि निवेद्य एलालवङ्ग कर्पूर केशरक्रमुक क्षोदभरितं ताम्बूलं निवेदितं। ततश्च ऋतुफलं दक्षिणां हिरण्यमयीं प्रदक्षिणाश्च निर्वर्त्य निराजयामास–

मल्लिकामालती कुन्द करवीरार्क धुस्तुरैः
पूर्णमञ्जलि मादत्स्व प्रसीद वरदो भव ॥६५॥

अस्तौषीश्च

गंङ्गा गर्वं शिखायस्य भ्रकुटीर्बाणसम्पदम्
नाशयत्यानयत्वेव तंवन्दे देव वन्दितम् ॥६६॥

हरहिमालयजा कृत सङ्गतिः
प्रकृति पुरुषयोः किल संहतिः

वससि योगविधावलकापुरे
शममतां ममतां परिपूरयन् ॥६७॥

तवविवर्तमयी जगती विभो
जयति जाग्रति लोकहितेत्वयि ।
कथमहं जगदेवनजाग्रियां
शमवतां भवतां खलु मानसम् ॥६८॥

भव भजन्ति भवन्त मनेकधा
विधि विधा विविधा परिदृश्यते ।
अथ महाविकलोऽस्मि मतिं विना
प्रकृतिमाहर माहर सन्मतिम् ॥६९॥

भृगुवरो भवदङ्घ्रिनिषेवणात्
भगवतः सुततोऽप्यधिकोऽभवत् ।
परमहं नहि तादृशयोगवान्
किमु नयामि नयामि कथं पुनः ॥७०॥

अखिललोक जयो भवदर्चनात्
अविकलः किलवाण करेऽभवत् ।
अधिगतं सकलं वसु संस्तुतं
गतवता तवतापहरं पदम् ॥७१॥

दशमुखो दशदिग्विजयान्वितो
हरसुरासुर वृन्दविनायकः ।
प्रियतया तवपादसपर्यया
प्रविरलं विरलं सुख मेधते ॥७२॥

किमपि कार्यं मवेक्ष्य विधिर्भवान्
किमपि चास्ति हरिर्हरं एव वा।
सकलकाल कलातिगतो विभुः
प्रभुतयाऽङ्कुतया परिबंधते ॥७३॥

यदि जनो जगदीशितुरादरात्
फल जलानि सुमानि समाहरेत्।
शिव शिवेतिरटन्किमुपेक्ष्यते
करुणया भवता भवतापितः ॥७४॥

हरसि मोहाचयं मनुजान्तरं
भरसि भोग भरानपि शङ्कर।
इतिनचार्थित मन्यदिहास्तिमे
तवदयाऽभ्युदयाय समीहिता ॥७५॥

प्रभुपदाब्जमरन्द मनीषया
सदन शोधन माश्रयतेमनः।
यदि कदापि पतिष्यतितेऽम्बकं
कुशलता शलता जगतोमम ॥७६॥

शकल वस्तु विधायक ते कृते
किमपि देयतया नहि दृश्यते।
तदपि चाटु कृदस्मि निजाज्ञता
मुपहरामि हरामितदायिने ॥७७॥

यमनुशीलयतां गिरिजेश्वर
जगदिद ह्यपबर्गं पदं भवेत्।

तमनुरुध्य भजामि सुचेतसा
ह्यसदृशं सुदृशं परमेश्वरम् ।।७८।।

विषमलोचनताविषमास्थता
विषमंतातु समस्त परिग्रहे।

प्रिय विषो भगवान् विषमप्रियः
कथमयं विषमो न विलोक्यते ।।७९।।

दीनो दुर्गतिदुश्चरित्रदुरितै राढ्यो दुराराधकः
किन्तु त्वत्पदपङ्कजे कृतमतिर्नान्यान्तिकं चिन्तये।

औदास्यं यदितेंभवेन्मयिविभोयायांकुतः कुत्रवा
देवं वैपरितोलुठामि विकलोरोरुद्यमानोऽवलः ।।८०।।

एवं भक्ति विह्वलोयोगी चणामृतं पीत्वा विल्व दलंगृहीत्वा निर्गत्य ज्ञानवापीं नन्दीश्वरं च नुत्वा नत्वा वटुनासह निवास स्थानमायातः। गृह्यपतिनातु अपूर्वातिथ्थी श्रद्वया सुमधुराणि भोज्यानि भोजितौ। ततः पूगैलालवङ्गै मुंखं विशोध्यानन्दपूर्णौ श्री सनातन शेषानन्द विदुषः समीप मुपविविशतुः वार्ताप्रसङ्गे साकेत सूकरक्षेत्रयोश्चर्चां कुर्वन् यतिर्ब्रह्मचारिणो जन्मत आरभ्य काशी समागमंयावन्सर्वं वृत्तमचकथत्। पण्डितस्तु वालमवलोकयन् (आकृतिर्हिगुणान्वक्ति) इति लोकोक्तिंध्यात्वा कालेनायं सत्सङ्गेन च सर्वविद्यापारगः सदाचारीवायुरिव प्रतापीरविरिव परोपकारी दधीच इव राष्ट्रप्रियो धृतराष्ट्र इव धर्मरक्षको धर्मराज इव भवितेति समाकलयामास। अथ यातुकामंयतिवरं पण्डितराजः प्राहयतिरत्न। यद्ययं वालो मत्पार्श्वेतिष्ठेत् तर्हि महान विद्वान्भविष्यति। स तदाकर्ण्यं वालकविरह मसहमानोऽपिवालस्य भाविविभूतिं भावयन् सास्त्रनेत्रस्तं संवोध्यशिरस्याघ्राय वालं विदुषे

समर्पितवान् । बालश्च यियांसुतं चरणयोगृहीत्वा विललाप । यति रत्नश्चतमुत्थाप्य बोधयित्वा पुनरागमिष्यामि शीघ्र मिति समतोषयत्–तीर्थान्यटितुं प्रवव्राज च ततो बालः–

श्री विश्वनाथस्य कृपा कटाक्षो
मांपालयेदिहनवीनगुरोः सकाशे ।
एवं निवेदयति वर्णिनि प्रादुरासीत्
गीर्वाणगीर्गुरुवरस्तवशम्भुमूर्तिः ॥८१॥

इति द्वितीय रत्नम्

पण्डित रत्नम

अथ च यतिगुरोर्गौरवं चरित्रंपरोपकारं स्नेहानुवन्धञ्चाधीयन वर्णी तुलसीदासो गगन सरणिमिवभवनघनावलीं मेघमण्डलीमिव सजलाम शैलश्रेणी मिवानेकोन्नत शिखरां गंङ्गामिव पावनींकैलास भूमिमिव शम्भुभूषितां पाठशालामिव वहुवुध सेवितां काशीं सम्भावयामास। नवीन गुरोर्निकटे निवसन् व्रह्मचर्येण चारित्रेणा-नुदेशानुपालनेन तन्मनः स्वस्मिन्नावर्जयामास। तत्तत्कालेतानि तानि कार्याणि विदधत् पाठनायाहुतोगुरोर्मन्दिरमाजगाम सुधाधवलं भव्यं भवनं विवेश प्रह्वीभूय यत्रैकतो विश्वकर्म.कुल्य वर्धकिनिर्मित नाना काष्ठकलाचित्रोपशोभिता शेंशिपी पुस्तकावलम्वावली विलसति। अन्यतश्चशुभगा चतुष्पादिका तूलगर्भपटीपूर्णा दुग्ध फेनोज्वलोत्तरीयाच्छादना वृहल्लघूपवर्हा विराजिता मध्ये च महान्पाण्डु कम्बल आस्तृतस्तदग्रे लघुलघूनि कौशासनानि शोभन्ते। कम्वलो परि महोपवर्हं माश्रित्योपविष्टं गुरुं निरीक्ष्याग्रेगत्वा सव्यापसव्याभ्यां पाणिभ्यां पादावुपसंगृह्यशिरसा पस्पर्श। प्राप्ता-शीर्वचनश्च निर्दिष्टे कुशासने सौम्यमुद्रयोपविवेश पुस्तकमुद्घाट्य-पठतिस्म गुरोर्वचनं श्रावं श्रावं वोधं वोधमभीष्टं पठित्वा निज कक्षां यातिस्मगुरुं नत्वा। एवं क्रमेणाधीयानोऽन्यैश्च सहाध्या-यिभिः कृतमैत्रः समैश्चपृच्छन्महद्भ्यश्चचिन्तयन् लघूंश्च वोधयन् विद्यार्थि जीवनं यापयामास। पठनावसरेऽस्य प्रश्नादिभिरस्य वुद्धिमत्तां जानन् प्रसन्नोगुरुर्विषयान्सम्यग्वोधयतिस्म। तदुपरिकृपाकुसुमानि विकिरन्वस्त्रकमण्डलु भोज्यादिनि स्वयं

द्वितीय द्वारावा सम्पादयतिवर्णी चापि रात्रिन्दिवं समयानुसारं आज्ञयाऽनाज्ञया वा शुश्रूपुर्गुरुं सिषेवे। ततः वेदाङ्गानां दर्शनानां पुराणेतिहासानां रामायणानामुपनिषदाश्च सम्यगज्ञानं पञ्चरात्राणाश्च बोधंकारयामास पण्डितः प्रियशिष्याय वर्णिने प्रतिभासम्पन्नाय। समावर्त्तयामास चैनं समुपदिष्टवांश्चसत्यंवदधर्मंचरगुरुन् शुश्रुषस्व मान्यान्मानय लघून्प्रीणय सदाचारमाचर समाजं सेवस्व लोकोपकारं कुरु दीनान्सुखिनो विधत्स्वयेनयशस्वी सुखी च भविष्यसि। एवं क्रमेण पञ्चदशवर्षाणिव्यतीयुः महान्विद्वान सनातन शेषानन्दश्चामृतीभूतोमुक्तो जातः। अथ स्नातको निजजन्म भूमि विलोकन कौतुकाकलितो गङ्गां देवीं तुनाव–

ब्रह्मद्रवे देवदया समुद्भवे
सुधाधिदेवि त्रिदशालयाद्वरात्।
भुवं गतांत्वां प्रणमामि जह्नुजे
समागतां सागरवंश शुद्धये। १॥

एके वदन्ति भवतीं प्रथमस्यधातुः
कर्मार्थिका मथ परेशिवधर्मजाञ्च।
अन्येहरेः पदसरोजभवां गुणाढ्ये
तत्वं तव त्रिपथगे नहिकोऽपिवेद ॥२॥

नाप्तंयदा भगवती महिमब्धिगाधं
वाल्मीकि नेव मथनाद्दवरेण यत्तत्।
गङ्गेतदा विविध भेद विमूढ़चित्तैः
किलभ्यमेव कविभिः कपिनिर्विशेषैः ॥३॥

सन्ध्यादिनं रजनिरित्थ मितित्रयस्य
शोभामपूर्वरमणीयतरांदधानां

देवत्रयस्य च भिदा मपि भेदयन्तीं
सर्वात्मिकां विभूमयीं द्युनदींनतोऽस्मि ।।४।।

दीनप्रहीण मतिमत्परुषेषु मातः
कृत्वाकृपां जलमयीं भवतीवभूव ।
संक्षाल्य चात्मकलिलं किलनिर्मलाङ्का
निर्वाणमार्गं पथिका ननुते भवन्तु ।।५।।

कामादिदोष मलिनोग्रहिलोजडेषु
क्वाहं क्ववाच भवतीं सुरराज पूज्या ।
पुण्यात्मिका परम पूरुषसङ्गिनी च
मातुः कृपां भयहरीं परिचिन्त्यामि । ।।६।।

कल्पद्रुमस्य कुसुमानि विचीयमालां
निर्माय देव दनुजामनुजायजन्ति ।
त्वांतन्मामास्तु विगुणं कसुमंकिमर्थं
इत्थं विमूढमनसं कृपयैवपश्य । ।।७।।

स्वर्लोक लोक ललनाः कलमालपन्ति
कीर्त्तेः कलाविलसितं ललितं जनन्याः
कर्मानुकूल कलि कल्मष कालितस्य
किमेश्शृणोति भवती किलकाकभाषाम् ।।८।।

स्नातुं विधि प्रवल वलादलोननीरे
देवाङ्ग नाङ्ग मृगनाभि मदप्रपूरे ।
शश्यत्तुषार शशि दीधिति शोभमाने
देह्यम्ब मह्यमरुणे समुदीयमाने ।।।।९।।

नामाभिराममभिधाय रमापतित्वं
केचिदव्रजन्ति शिवतां तव दर्शनेन।
तीरं गता विबुध लोक धराधिपत्वं
गंङ्गे विचित्र चरितेमयितद्द्वयस्व ॥१०॥

देव्यस्त्वदीय महिमप्रभवाः समस्ताः
संसारसन्तरण योगविधान दक्षाः।
नद्यश्चयाः किलभवन्ति समस्त लोके
तास्ते विभूतयइति प्रणमामिमातः ॥११॥

इति स्तुत्वा नत्वा स्नात्वा नित्य नियं विधाय कुण्डींपरिपूर्यं वरिवस्यार्थं नानोपचारानादाय देव पूजनार्थं प्रचलितः। प्रथमं साक्षि विनायकं प्राप्तं ववन्दे तुष्टाव च–

हेरम्ब मेकदशनं ग्रसनं ह्यघानां
विघ्नौघघातनमहं शिरसा प्रपद्ये।
माङ्गल्य मण्डलमिलन्महनीयकीर्त्तो
सिध्याश्रितं चजननी जनकं प्रियंत्वाम् ॥१२॥

तस्यार्चां चरित्वा प्रह्वोवभूव ततश्चलितो ढुण्ढिराज समीप मागतः। गणपतिं प्रियनाथं विधानपं शिवदंशिव वालकं विविध विघ्नविघातकं मङ्गलालयं प्रार्थयन् वरिवस्यां समाप्य तुष्टाव–

हेरम्बमम्बामवलम्बमानं
लम्बोदरं लम्ब वितुण्ड शुण्डम्।
उत्सङ्ग मारोपयितुं ह्यपूर्णा
हसन्त मन्तर्हरि रूप मीडे ॥१३।

मिलिन्द वृन्द गुञ्जनोल्लसत्कपोलमण्डलं
श्रुतिप्रचालनस्फुरत्समीर बीजिताननम्।

वितुण्ड शुण्ड मण्डल प्रसार शोभिविग्रहम्
निवारिताघविह्न राशि मङ्गलालयं भजे ॥१४॥

गजेन्द्र मौक्ति कालिलग्न कम्बु कण्ठ पीठकं
सुवर्ण वल्लिमण्डली विधान वद्धदन्तकम् ।
प्रमोदि मोदकाञ्चितं करण्डकं कराम्बुजे
दधान मम्बिका मनोविनोद मोददायकम् ॥१५॥

गभीरनाभितुन्दिल सुपीत पाटवाससं
प्रपीतहाट कोपवीत शोभिताङ्ग संग्रहम् ।
सुरा सुरार्चिताङ्घ्रिकं शुभक्रियासहायकं
महेश चित्र चायकं विनायकं नमाम्यहम् ॥१६॥

निलिम्पलोक मण्डली प्रपूर्व पूजनीयकं
सुभक्त भक्ति भावना विभाविता खिलप्रदम् ।
प्रभूत भूति भावकं दूरुह दुःखदावकम्
व्रजेश्वराशं सम्भवं गजाननं भजाम्यहम् ॥१७॥

गिरीन्द्र नन्दिनी कराम्वुज प्रसाधितालकम्
विलोल शुण्ड चुम्बितोग्र चन्द्रचूऽभालकम् ।
निजाखुखेलनापरं करवन्त मन्तरायघं
नमामि वुद्धि सिद्धि हस्त चालि पञ्चचामरम् ॥१८॥

विनायकस्य विर्नति साध्यसिद्धि प्रदांसदा
पठतां श्रृण्वतां सन्ति मङ्गलनि पदे पदे ॥१९॥

स्तुत्वा नत्वा च मातुरन्नपूर्णायामन्दिरं प्रतस्थे द्वारभूमौमस्तकं दत्वाऽभ्यन्तरं गत्वा देवी समीप माप्य यथा मिलितोपचारै र्रचित्वा तुष्टाव—

जगज्जालं यालं कवलयति लोकोपकृतये
महा कालं व्यालं विदलयति विश्व प्रसविनी।
सुराणां सम्पत्तिः समुदयति यस्या. प्रभुतया
समीडेत्तां देवीं सदय हृदयां मातर्महम् ।।२०।।

जगत्यां जायन्ते वहुसुकृतिमन्तोहि विवुधा
भजन्ते त्वामद्धा समसुख समृद्धाश्चजननि।
नते पूजां जाने नचनवन नीतिश्च विरहं
सुमन्तोर्मेमातर्मतिरतिरथास्तां तवपदे ।।२१।।

सर्वंपूर्णा सदापूर्णा पूर्णा च जगतीयया
सान्नपूर्णा मममतिं पूर्णां कुर्यान्महेश्वरी ।।२२।।

एव मञ्चनं चरित्वा समर्पणं कृत्वा प्रसादमादाय वहिर्निस्सार देहलीं नत्वा प्रतस्थे पवनतनय निकेतनं प्राप्य सम्पूज्याक्षयवटंच परिक्रम्य हनुमतं समनौषीत्–

सूर्यो ग्रासायते यस्य सागरः पल्वलायते।
लङ्का तृणायते हस्ते शैलश्च शर्षपायते ।।२३।।

तं महावीरमतुलं राम मानसतोषकम्।
स्तोतु मक्षममात्मानं तत्पदोः पातयाम्यहम् ।।२४।।

तदग्रेमन्दं मन्दं व्रजन् मन्दं प्रणम्य श्री भगवतो विश्वनाथस्य प्रथमद्वार मायातः प्रवणे मूर्धानमाधायाभ्यन्तरंगतः स्वर्णमन्दिर मालोक्य प्रणम्य पश्चिमद्वारेण भगवत्समीपमुपजगाम। ततश्चोपचार भाण्डामि रक्षित्वा भगवन्तं ध्यायन् समस्तौषीत्--

महाश्वेत मद्वैत मेकं विशालं
लसन्छूलढक्काकरं चन्द्र भालम्।

पशूनां पतिं नागमाला करालम्
समीडे कपालस्रजं कालकालम् ॥२५॥

अथ चागमानुसारं पाद्यादि कुशुमाञ्जल्यन्त मर्चामारच्य मनोयोगेन स्तौतिस्म–

जागरेऽहंकृति यस्य स्वप्नेट्यनुभवस्तथा ।
सुषुप्तौ स्थायुकत्वं च तन्महः समुपास्महे ॥२६॥

अलक्ष्यं लक्ष्यं चेत्युभयविध वेदानुवचनम् ।
अविद्या विद्यात्रातदधिगमकं किन्तु नितराम ॥
स्फुर ज्योतीरूपं यति जनमनो मोदजनकं ।
शिवं स्मारं स्मारं मति रति रतिं मे वितनुते ॥२७॥

असत्सत्तांधत्ते निज जन मनोवाञ्छित कृते ।
अनीहोऽपीहानां भवति परिपोषीरतिजुषाम ॥
शरीरं पार्वत्याविहित तपसा तुष्ट मनसा ।
ललम्बे यस्तस्मै समहृदयधाम्ने ममनमः ॥२८॥

हरिर्हीनांवृत्ति शिव तव कृते त्वदंतनुतां ।
दधौपुत्रोऽप्यासीत् करिवदनरुपेण भगवन् ॥
वियदगङ्गानीरं वहति शशिधारी च कुशुमं ।
नमस्तस्मै सर्वातिगगुणवते शक्ति पतये ॥२९॥

प्रियः श्रेष्ठो ज्येष्ठो निगमवचनैर्योनिगदितः ।
वुधैः शम्भू रुद्रो भव पशुपती उग्रगिरिशौ ॥
कपाली शुलीवानलरविशशाङ्क त्रिनयनः ।
स्तुतो यस्तं देवं नमतिमतुजे सर्वं विभवः ॥३०॥

कदाचित्कैलासं स्वत्रिषयविभूतिं प्रकटयन् ।
गतोब्रह्मा तत्रागतवहुविधीन्वीक्ष्यमनसा ॥

ह्लीयादीनंदृष्ट्वा प्रणयवचसातोषयदमुम् ।
विधाताधातृणां भवति च भवानेवगिरिशः ।।३१।।

असंख्यब्रह्माण्डाधिकृतहरिधातृप्रभृतयः ।
तवाज्ञाकर्तारो भवविभवसम्पादनपराः ।।
दीगीशाश्चैतेषांभृकुटिमवगच्छन्ति भगवन् ।
महैश्वर्यं तत्तोत्रिभुवनजनागोचरगुणम् ।।३२।।

भवदनुचरराजः पुष्पदन्तोयदासौ ।
तवनुतिविधिकीर्तिं नाभजत्केतदान्ये ।।
परमिहपरमेशं पत्रपुष्पप्रदानैः ।
भजति किमुन लोकोभावलुब्धाहिसन्तः ।।३३।।

विभो भवत्तत्व मिदन्तयानकै ।
र्ज्ञातं कथन्तन्मयकाऽनुभूयते ।।
परं यथा त्वंहि तथा दयानिधे ।
ममोत्तमाङ्गं भवदङ्घ्रिभृङ्गितम् ।।३४।।

मतिरतिविकलामेवासनायोगजालैः ।
क्षणमपि न तवाङ्घ्रिद्वन्द्वपद्मेऽनुरक्ता ।।
दुरितदहन तस्मात्प्रार्थये त्वत्पुरस्तात ।
मदनइव मदीयाहंकृतिर्भस्मभूयात् ।।३५।।

भगवत्पूजनं कृत्वा नत्वा चरणामृतंगृहीत्वाविल्वदलमादाय शानवापींनन्दीश्वरंनमनस्वस्थानमायातोमध्येदिनंविशश्राम । प्रदोषे भैरवादीन्देवान् दर्शं दर्शं रात्रौसुखमास । अथापरेऽह्नि प्राभातिकंकर्मसमाप्यगगनान्धनकारध्वंसकेमरीचिमालिन्युदयनुपक्रामति । श्रीगणेशंसंस्मृत्य दक्षिणंचरणमुत्क्षिप्यप्रचलितः पत्तनावाचोपथेन

निर्ययौ। गच्छन्पथिलघुलघुमृण्मयतृणमयघर घटितान्घनान्वि-
रलाश्चग्रामग्रामटिकाग्रामान्दर्शंदर्शंमध्येमध्ये कुत्रापिमहतीकुत्रापि-
लघ्वीर्वाटिकाः बहुविधभूरुहभरिताः पथिकाकर्षणकुशलाः मरकत-
मणिमयपालिपल्लवा घनच्छादितशैलश्रेणीरिवचेतोहराश्चपश्यत्।
यत्र तत्कालिकपुष्पफलवत्पादपेषुशुकपिक सारिकासमजान्स्थिता-
ताननुड्डीयमानान्गुञ्जद्भ्रमरभ्रमणानि चालोकयञ्चलतिस्म।
काशीलब्धविद्योगुरुकृपापीयूषपूर्णः सस्नातकश्चलञ्चलन् यत्र
जलाशयं प्रपां वा शालां पश्यति विश्राम्यति यत्रचनदींतडागं
देवमन्दिरंवासमीक्षते तत्रनिशिनिवसति। काशीतो विद्वान
तिथिरागत इति तत्रत्यैजनैः सत्कृतश्चभवतिस्म। प्रातरुत्थाय
स्वमार्गमनुसरति तदेवमटन् निलिम्पलोककल्लोलिनी पुलिनंलेभे।
पूर्वाध्वनि तथात्ररोधसि च वितृणान्तरालं प्रह्वीभवन्तं
सफलशालिसमवायं जननीमिव भुवं गुणवत्सुतमिव कुतश्चिदेरण्ड
पादपान्फलभारभृतोऽप्युत्तुङ्गान् परोपार्जितवित्तं प्राप्तानविवेकिनो-
जनानिव अन्यत्र गण्डकमण्डलं श्यामायमानकेदारान्यथापश्यन्
स्वामिनएतेषां हर्षाभिभूताभवेयुरितिचिन्तन्स्वयमपिप्रसन्नः कस्या-
मपिनाविस्थित्वा गंगा मुत्ततार यत्रतीरे कस्यापितीर्थविप्रस्य
छत्रच्छायायांस्वासनादिसंस्थाप्य स्नातुं प्रयतोमिलिन्द मालाविल-
सितकुवलयवलयं नानाजलचरखगवर्गकृतारवगीतकीर्तिकंस्नातुमा-
गतसुजनजनदत्ततिलतण्डुलफलधूपादिसुशोभितंसुरसरित्तीरं अवा-
लुलोक। ततोनत्वा मन्दाकिनीतटमृत्स्नां मस्तकेविलिप्य मातः
पादस्पर्शं क्षमस्वेति वदन्धारां प्रविवेश। नाभिमात्रं जलं गत्वा
विधिनास्नासीत्। तत्रैवसन्ध्यातर्पणे कृत्वा निर्गत्य धौतोत्तरीया-
भ्यामङ्गान्याछाद्य तिलकं कृत्वा स्वर्णदीं समर्च्य नुनाव-

रत्नावलीं वसुमतीहृदये विशालां।
नाकाधिपत्यविजयस्य च वैजयन्तीम्॥

पापाद्रिपक्षहरणे हरिबज्रधारां।
भागीरथीं भगवतीं भजतां न तापः ॥३६॥

मार्तविचित्र चरितावलीसंस्तवाय।
कोऽयंविमूढ़हृदयः प्रभवेज्जनन्याः॥
किन्तुत्वदीयकरुणा वरुणालयस्य
विन्दुं लभेयतदिहास्ति ममप्रयासः ॥३७॥

बाल्यात्क्षमस्व ममधाष्ट्र्यमिदं द्यु सिन्धो
चेतश्चमत्कृति विडम्बनमेंवचेंवम।
दीनोविवेकमतिहीनइतित्वदीय।
कारुण्यमेवममसाधनमस्तिमातः ॥३८॥

प्रोद्यद्रविप्रखररश्मिविशालजाल।
स्वर्णप्रभां भगवतीमवलोक्य लोकाः।
प्रातः प्रभूतस्वकृतं सुकृतं विदन्तो।
घोराघहन्तृसलिलैः स्नपनंलभन्ते ॥–॥३९॥

काश्मोरचित्ररचनाचरिताङ्गयष्टयो
देवाङ्गनाकचकलापकलापिशोभाः।
स्नातुं विशन्ति समुशन्ति च लोललीलाम्
मातस्तदातु भवती भवति त्रिवेणी ॥४०॥

तत्ततरुपरिपतत्पतगा जनन्याः।
पूताः पपित्रपवनैस्तवसत्तुषारैः॥
भिक्षुपसृष्टकवलाकलनाय याता।
मार्तमहेशि सरमाघिशगोऽपिधन्या ॥४१॥

अयि मयि सदये वहुदुहृंदये धेहि दयाम्।
तव कृतशरणे पुण्याभरणे शोधयमाम् ॥४२॥

ततोदेवीं पूजयितुं प्रस्थितो विन्ध्यवासिनीमन्दिरद्वारि मस्तकं नमयित्वापरितःपाठकारिणःपण्डितानपश्यन्नाभ्यन्तरंप्राप्य देवीं-दध्यौ-

मुनीनांमन्तव्या वुधजनसुविद्या दिविषदां ॥
महाशक्तिर्भक्तिर्भवति भजतामत्वामविरतम्।
बिमुक्तिर्युक्तानां सुजनगृहलक्ष्मी सहृदये।
ततोमातस्तत्तेचरणयुगलं मेस्तुशरणम् ॥-॥४३॥

मधुपर्कार्घ्यादिप्रदक्षिणान्तं वरिवसित्वा नुनाव-

विधिहरिहरदेवास्त्वामुपास्यैव सर्वे।
जगदिदमतिचित्रं चिन्तयन्तोविरेजुः ॥
त्रिभुवनजनलोकाश्चापि स्वस्वाभिलाषम्।
लघुलघुभजमानाभूतिभाजोभवन्ति ॥-॥४४॥

अहमपितवपादाम्भोजभक्तोभवेय।
मितिविलसतिचित्तेतत्पुरस्तेनतोऽस्मि
प्रभवति भवदीयाद्दक्कलाकल्पवल्ली।
ममममनसिभवत्याः प्रेमविस्तारमेतु ॥४५॥

विन्ध्येस्थितां विन्ध्यमहत्वकारिणीम्।
विध्वंसिनीं ध्वान्तधराधराणाम्
रक्षोविलक्षं च विलक्षणंमनो।
भवेत्प्रशस्तं तदिदं तथा क्रियाः ॥४६॥

सपर्यां समाप्य प्रसादमादाय त्रिकोणयात्रांप्रक्रम्यचलितो गुफाकालींकपालमालिनीमवालुलोक ताञ्च नुत्वा नत्वा चलन् विन्ध्यधृतधर्मानुध्यायन् विशालां महीध्रमालां नवप्रवालविलसिता-नेकजातीयतरुलतागुल्मगम्यमानशोभां गवयगोमायुफेरुहरिण चित्र-कगण्डकगोमहिषादिकेलिं पश्यन्पुस्करनिर्झरादिगतखगभृङ्गकला-लापांश्चशृण्वन् शनैः शनैः अष्टभुजांभवानीमभिगत्य ध्यायं-ध्यायंमुवाच–

असङ्ख्यदोषं भवतीं भवानी।
मनन्तनाम्नीं च महाप्रभावाम्।
भक्तास्त्वदीयावसुवाहुनाम्नीं ॥
वदन्ति तन्मेमनसोविमोहः ॥४७॥

मोहंविनाशय समाशय प्रेमधारां।
वारांयथा तदितिमेप्रणिधानमास्ताम्
तत्वं विलोक्यनिजवालविलापमम्ब
क्रोडेकुरुष्वजननीव जगज्जनित्री ॥४८॥

स्तुत्वा ननामच ततोनिर्झरझर झर ध्वनिं श्रुत्वा प्रपातसमीपमुप गतस्तदद्दश्यंमनोहरंनिरीक्षमाग इदमपि पण्यमेवेतितज्जलं निपीय-प्रस्थितो निवासस्थानं प्राप्य त्रिदिनमुषित्वाप्रकृतमनुसरन् गगनगज घण्टायमानयोः शशिसूर्ययोराकासपादपात्पलायमानेषु नक्षत्र-खद्योतेषु रविकरधौतान्धकारिषु दिङ्मण्डलेषु भज्यमाना-सुनिस्तब्धतासु मुखरितेसुजनारावेषु कृतनित्यक्रियो व्रह्मचारी जन्मभूमिंस्मरन्प्रचलितः। पुरोध्वनि ग्रामग्रामटिकापल्लीपत्तनानि कूपवापीसरोवराणि वनोपवनोद्यानानि विविधपादपोपशोभ-मानानि पशुपक्षिभृतानिनिभालयन् वहुप्रयाणकैर्निजजन्म महीमुपेतो दशसत मरोचिमालिनिभगवतिपश्चिमाशामालम्बमाने

गगनाङ्गणे च बहुरंङ्गरंजिते शशिनि च सुधाकरे प्राच्यामुदयमाने मन्दंमन्दं च तमोराज्यप्रभावे विवर्धिषौ कस्यचित्क्षेत्रकूपस्य सविधे साधनानिस्थापयित्वा क्षेत्राणिसफलसस्यानि कानिचित्केवलकृष्टानि कान्यपि हलिसमीकृतानिलोचनलोभनीयानि दर्शंदर्शंनिरलसचेताः केनचिद्ग्रामीणजनेनावलोकितः पृष्टश्च नवीनः पुरुषोभवानकः कुतश्चायाति क्वयास्यति स्नातकश्चसाश्चर्यं चेतसोजनस्यकौतुकंकर्त्तयितुमूचे ।। ब्राह्मणोऽहं काशीतः पठित्वाऽऽयामिकोऽयंग्रामो भवांश्च क इत्यहमपि पृच्छामि ततो ग्रामीणेनोक्तं राजापुरनामकोऽयंग्रामोऽस्मिन्नेवाहंवसामि ब्राह्मणोऽस्मि तच्छ्रुत्वाममापिजन्मात्रैवग्रामेऽभवदितिकथितवतिस्नातके श्राम् किमात्मारामद्विवेदिनः पुत्रोरामवोला इतिवदन् वाहुभ्यांतमादायहृदये च शिश्लेष । प्रेमविह्वलमानसेन तेन सह रामवोला ग्रामं विवेश तस्य गृहं गतो ब्राह्मचारी ब्रह्मणेन भोजनाच्छादिनासत्कृतो विशश्राम ततो । ग्रामवृतान्तं द्विजकथितंश्रुत्वा मदीयाः पूर्वपूरुषाः कथावशेषाइति ज्ञात्वाप्रादुभूर्तंशोकं ज्ञानेन निरुध्य शयितः । प्रातः कालिन्दीकूलंगत्वा यमुनास्तवंविदधौ–

> कालिन्दीयमुनादिनेशतनयावैवस्वतस्यानुजा ।
> कृष्णस्यातिरतिप्रदावुधवरैराराधिताऽऽराधिका ।।
> यत्कूलेऽलिकलस्वरैकनिलये राधातटे क्रीडति ।
> तां गोपीगणगोपगोधनसखीं प्रीत्यानमामोवयम् ।।४६।।

ततोविधिदृशा स्नात्वा सन्ध्यांध्यात्वा पितॄंस्तंर्पयितुं शास्त्रोक्ताः सर्वाः क्रियाअकरोत्सस्नातकोब्राह्मणांनांसाहाय्यात् । ततः काशीतः सर्वाविद्याअधीत्य रामवोलायः तुलसीदासेति संज्ञितः समायात इति ग्रामीणैः सत्कृतः सौविध्यञ्चनिवासादीनां कृतमिति ससुखं तत्रन्यवासीत् । सस्मार च–

समस्तविद्याप्रदमीश्वरं गुरुं
विपश्चितांरत्नमितीव भावयन्नम ॥
दयांतदीयां बहुमानयन् ।
स्कुर्वंनस्वकं धन्यतमंह्यबुध्यत ॥५०॥

सर्वान् रामकथां जनानकथयताद्भक्तिप्रदांसादरात्
रामोराघवएत्य मां कथयतीत्येवंमनोभावयन्
आनन्दामृतपूरपूर्णमनसानिश्चित्य सस्नातकः
सम्पाद्याभगवंस्त्वदीयकरुणादत्ता समाज्ञामया ॥५१॥

"इति तृतीयरत्नम्"

कन्यारत्नम्

अथ मुनिस्तुलसीगणनायकं ।
गिरिजया सह फुल्लफलोत्कैः ॥
रविशशिप्रमृतीन्प्रियपूजितान् ।
दिशिपलोकपषोडशमातृकाः ॥— ॥१॥

प्रणयतः प्रणमनसहसास्मरन ।
सुमनसांमनसाञ्चविपञ्चनैः ॥
नुतिपरो भगवत्प्रभूताकथां ।
कथयितुं स्थिरचित्तापरोऽभवत् ॥—॥२॥
रामायंण रामकथापरायणं ।
रसायनं संसृतिसेव्यसम्पदां ॥
निर्मायियोलोकहिते धुरीणता ।
मवाप तस्मैकवये नमोनमः ॥ ॥३॥

आदौविधायकवितां कविशब्दभाग्यो
जातोभवे प्रथमतस्तमहं मुनीनाम् ॥
प्राचेतसं प्रसृतचेतसमीश्वरत्वं ।
रामायसम्प्रददत्तं मुनिमानतोऽस्मि ॥४॥

तदनुकविपुराणं कृष्णपाराशरंवै ।
वसुदशसंख्यानि श्रीपुराणानिकृत्वा

व्यभजदथवेदान्   लोकलाभाययस्तं ।
जयकृतमहमीडे   सत्कथापूर्वमेव ।।५।।

हरिकथारसपानसमीहना ।
दिविगिरौ   नगरेचसुवासनाः ।।

समवयन्तु   सुधीरसुचेतसो ।
ममनिवेदनमस्तु   यथार्थवत् ।।— ।।६।।

एवमनुदिनंकथांकथयन्प्रसिद्धोऽभूतजनपदेषु तात्विकी जनश्रुतिश्च प्रसृतायतकोऽपि विद्वानकथावाचकः प्रवचन पटुदृष्टान्तकुशलो लोकमनस्तोषकश्चातुर्यंचुञ्चुः कथांकथयति राजापुरे तत्र च प्रतिदिनं कथाश्रवणरसिकाः समायान्ति कथा माकर्ण्यं गच्छन्तस्तुवन्ति च। कथाकथनशैलीएवं नित्यक्रमः प्रचलति कतमस्मिन्नहनिसत्कर्मनिष्ठः कोऽपिब्राह्मणः समयातः कथामाश्रुत्य गतश्च। पथिगच्छन् व्यासासनउपविष्टंविद्वांसंसर्वाङ्गसुन्दरं कथाकथनकुशलं वाक्चतुरंदृष्टांन्तदाननिपुणं जन मनोरञ्जनचञ्चुंब्रह्मचारिणं प्रशंसन्स्वसद्मप्राप। तस्य च निखिलाव यवसौष्ठववतीविदुषीव्यवहारचातुर्यंचणारत्नावलीनामकन्या परिणययोग्या आसीत। ताञ्चालोक्य मनसितेन विचारितं यत् यदि अस्यासम्बन्धोराजापुरस्थ रामायणप्रवचनकर्त्रासहभवेत्सुवर्णसुगन्धसहयोगः स्यात इति भगवन्तं विनयन कतिचिद्दिनानन्तरं राजापुरं गतः कथाश्रवणव्याजेन तत्र गत्वा व्यासंनत्वोपविष्टः प्रवचनमसृणोत कथावसानेगतेषु श्रोतृवर्गेषु ब्राह्मणः कुशासनोत्तमें पर्यासीनं कतिचन जनैः सहालपन्तस्नातकं सङ्गतः स्वागतबचनैरासनउपवेशितः पृष्टश्च भवान्क कुतआगतः किञ्च वाञ्छति ततो विजेन भणित महाशयाः पारेयमुनं पारतार पिता ग्रामे वासी भारद्वाजगोत्रीयो ब्राह्मणोऽस्मिदीनवन्धुनामापाठकः कस्मिश्चिदहनि

मयात्रागतेनदृष्टस्तदाविचारितंयदयंवुधोव्रह्मचारीसर्वगुण सम्पन्नः ममतनूजादेववाणीप्रवीणा कवयित्री पाककुशलासूचीकर्म मर्मज्ञागृहकार्यदक्षा शुश्रूषाभिज्ञा रत्नावलीनाम्नी यदि दैव योगात भवतामयंपण्डितोव्रह्मचारी · तामनुगृह्णीयात्तर्हिममोपरि महाननुग्रहोभवेत। समयश्चास्य विदुषोगृहाश्रमंप्रवेष्टुं ततोभवद्भिः कृपाकरिणीयेतिततोवर्णी स्नातकोऽवदतद्विजदेव भवतप्रोक्तं लोकव्यवहारेमहनीयमेव किन्तुगृहाश्रमवद्धोलोकसेवांकर्तुमयोग्यो-भविष्यामीति समीचीनमपिभवदाज्ञांविधातुमप्रस्तुतोऽस्मि तत्क्षन्त-व्योऽस्मिभवतेतिमदीयाभ्यर्थना। तदन्तरं प्रतिवेशिनामनुरोधेन-विप्रस्य च विनयेनस्वीकर्त्तव्योभूत्वा तत्कार्यमङ्गीचकार ततः प्रसन्नोद्विजः (रत्नंसमागच्छत्तुकाञ्चनेन) इति वदन्सर्वेभ्योधन्यवादंदत्वाप्रस्थितोगृहंप्राप्तोगृहिण्यैकन्यासौभाग्यप्राशस्त्यंवहुगुणंज्ञापयन् तुतोष। प्रसन्नाव्राह्मणीकन्योपैकानिवारातयोग्यानिच वस्तुजातानिसंग्रहीतुंपत्यासह सम्मतिञ्चक्रे। पदार्थाननिचिकाय प्राहगृहपतिम्–

वहुविशालरसालफलोद्गमा
दलिकुलानिगतानि सरोवरम्
कमलकोमलकेशररञ्जनं
मधुनिपीयसुखासनमासते ॥७॥

गृहपतेजडजङ्गमनूतनी।
करणशक्तिरसावृतुभूमिपः॥
द्रुमलताकुसुमैश्चफलैस्तथा।
सुशुभगाः प्रविधायसमागतः॥८॥

इदानींस्वगृहेसन्तिधान्यानिविविधानि च।
सारदानितथान्यानिदध्याज्यंसुफलानि च ॥९॥

कन्याविवाहकार्यस्य समयश्चसमागतः ।
वरंवरयलग्नं च स्थिरंकुरुयथासुखम् ॥१०॥

प्रियायावचनंश्रुत्वा प्रहृष्टोब्राह्मणोह्यसौ ।
राजापुरंगन्तुमना जगृहेकाञ्चनंफलम् ॥११॥

गतश्चततपुरंविप्रोद्विजंतं वेदपारगम् ।
सुदिनेसुमुहूर्त्ते च समाजेमङ्गलोक्तिभिः ॥१२॥

वव्रेतंस्नातकंवासोहिरण्याक्षतसत्फलैः
ततोलग्नंसुनिश्चित्यसमायातः स्वकंगृहम् ॥१३॥

श्रीतुलसीदासश्चात्मीयसुजनानांपरामर्शेणविवाहयात्रा योगया-निवाद्ययानादीनिसम्पादयामास। उभयत्रचमङ्गलतूर्यगीतध्वनयो-वभूवुः। आभ्युदयैकमातृपूजाहरिद्रांलेपनादीनिसम्पन्नानि। अथ तुलसीदासोदम्भाडम्बरविडम्वनांविहाय विहितविप्रसमुदायः शिविकांशोभनामारूढः सुशसिनीभिर्मङ्गलगीतानिगायन्तीभीरम-णीयवेषः कवचोस्णीषोत्तरीयैः पीतारुणैर्विराजमानो मस्तकोपरि-भ्राम्यमाणेनोपलेनकृतपरीक्षणः प्रतस्थे वारयात्रिकाश्चयथायोगया-नियानानि वाहनारूढ़ास्तमनुययुर्वाद्यवादकाश्चयमुनातीरमागता-स्तांनत्वा नवनंकुर्वन्तोनावापारंजग्मुः कन्यापितृकृतप्रियैर्नाविकैर्न-स्वीकृतंकिञ्चिन्मूल्यं ततोयानवाहकानांवार्तामारकर्ण्यहसन्तः सर्वेपा-रतारपितग्रामनिकटे प्राप्ताः। ततःकन्यापक्षियैर्जनैर्मङ्गलम-यस्वागतवचनैर्ग्रामं प्रवेशिता। कतिपयमण्डपमण्डलान्युलङ्-घ्यपाठकद्वारमायाताः गणेशपूजनोत्तरंवरपूजनेजातेतत्रस्थैः सुजनैर्धौतैपादासर्वेमधुमधुमोदकफलजलादिभिः कृतलघ्वाहाराबीत-श्रमा विस्तरितवहुविधविस्तरस्यवहुविधदीपप्रज्वलितस्य तम्बुक-स्याधस्तात्समाविविसुःवरस्तुतन्मध्येसुवर्णसूत्राकलितवस्त्रभूषितेसो-

पवर्हेसमुच्चासनेसम्पविष्टः। ततःकन्याजनकाभ्यर्थं नयावर स्तदगृहाङ्गणमगाततत्रचतूर्णमितशुद्धवंशस्तम्भशोभमानेचित्ररंजितेम ण्डपेसादरंपीठोपरीसमुपवेशितः। समार्येणपाठकेनपाद्यार्घमधु र्कादिभिःप्रपूजितः शाखोच्चारपूर्वंकंकृतसंकल्पांकन्यामादायपार्श्वे-समुपवेश्यवंदिकैर्निर्दिष्टान्विवाहविधिनविधायसिन्दूरदानोत्तरंसुवा सिनिभिःसमंकौतुगारेप्रविशन्जम्बूलमालाकृतपरिहसानाकर्णयन्हस-नस्वोक्तिभिश्चताःपरिहासनयनतत्र कञ्चितकालंस्थित्वाजनावास-मायतः पाठकमहोयोवरसमाजं निजगृहाङ्गणमानाचयपादप्रक्षा-लनपूर्वंकंविष्टरेषूपवेश्यपत्रावलिपत्रपुटकेपुषडरसभोज्या निपरिवि ष्यममाकिन्चनस्ययथोपस्थितंभोज्यंसांनुग्रहंभवन्तोभुञ्ज तामितिवि नयवचनैराशयामास। नारीणांपारिहासगीतानिश्रावंश्रावंसहर्षा-बुभुजुःर्वारियात्रिकाःग्राचान्ताश्चसुधाखादिरक्रमुकक्षोदैलालवङ्गके-शरभृतास्ताम्बूलविटिकाश्चर्वयन्तोजनावासमागताः सुखंशेरतेस्म। एवं क्रमेणदिनत्रयंमुषित्वाचतुर्थ्यांरात्रौचतुर्थीकर्मसमाप्य पञ्च-मेऽह्निप्रातःकल्यवर्तकृतश्चवरःश्वश्रूंनंत्वाविदायुमादाय प्रस्थितः। सुन्दराटोपपरिवृतांदोलामारुढ़ादुर्लभीपित्रावोधिता पुत्रि! लोकव्य वहारवशात्वांपरगृहंप्रेषयतोममचेतश्चञ्चलं किन्तुतवपतिर्विद्वान्स-ज्जनश्चेतिविरयहृखेदंखेदयामित्वञ्चतत्र स्वव्यवहारेणतत्रत्यजना न्तोषपन्तीपतिंशुश्रूषन्तीसुखमापस्यसि। तथाऽस्माकंवियोगकातरयं नोनकुर्याएवंतांवोधयित्वा जामातरंप्राहप्रियवरइयंकन्यायद्यपिसुक्षि तासुशीला च तथापिचैनांप्रेम्णा शिक्षयाचैवाद्भवदपराधक्षमयाचपा-लनोया। भवान्विद्वानितिकिंवहुजल्पनेन.वरश्चश्वसुरंप्रणम्यचलित समाजोदोलाचोत्थापितावाहकैःस्ततोऽनुजगामपाठकः सरोवरान्तंव-रेणावारयात्रिकैःप्रार्थितःपाठकःस्वगृहमायातः साश्रांसहधर्मिणीमा श्वासयामास देवि तवसुतायोग्यवरेणसंगतेतिनशोकावसरः सुखमास्व। कन्याऋणमिवस्थितां तत्स्वामिने दत्त्वावयमनृणाइत्येवंद-

न्सविप्रःपरमानन्द मवाप। राजापुरनिवासिनोजनाश्चपाठकस्य सौजन्यंमौदार्यंसत्कारांश्चप्रसंसन्तोगच्छन्तोमार्गेगायद्भिर्दोलिकाहारैः प्रहासैश्च प्रसन्नाहसन्तश्चतरणितनयातीरमायाताः। मातर्यमुनेज यजयेतिघोषंश्रुत्वादोलापटान्तरतोनदींनिरीक्षामाणन्नुनावप्रेम्णारत्नावली—

रविसुते शुभजीवनसंभृते।
नरसुरासुरभक्तिसुवन्दिते॥
जनमनोनुगुणं फलदायिनि।
व्रजकिशोरसखीं प्रणमाम्यहम्॥१४॥

स्मरतियः सचभक्तिभरोभवेत्।
भजतियः सचभक्तवरोभवेत्॥
तवजलंपिवतः परमार्थता।
विहितमज्जनतः सकलार्थता॥१५॥

जननितीरतटे तवसंस्थिति।
र्ममतुयासुलभा तदुसौभगमं॥
अथसमर्थय मां पतिदेवता।
मितिनमामि भवानितवप्रिया॥१६॥

सुदोलिकाभ्यन्तरमास्थितासा।
रत्नावलीप्राप्तमनोरथा यथा॥
क्रोडेगताप्रीततरा जनन्या।
धन्याहमित्येव मनोववन्ध॥१७॥

इतिस्तुताभास्करजातरङ्गजैः।
शब्दैरथोचे सुभगासदाभव॥

ततोऽतिहर्षप्रवणासुवासिनी ।
मेनेहिसर्वंमनकूसोऽनुकूलम् ।।१८।।

अथ जननि इति वदन्तो वारयात्रिका नावमारूढ़ा पारंगता नाविकेभ्यो मूल्यंदत्वा दोलिकयासहराजापुरं प्राप्ताः कदलिकलशादिभिः शोभितवरद्वारंसमायातः पुत्रवतीभिः सौभाग्यवतीभिर्दोलिकापरीक्षणेऽक्षतदानेचकृतेवरेणसार्धंवधूर्गृहेप्रवेसिता च तौच प्रथमंससीतारामंप्रणम्यकुलदेवमर्चयित्वा विशश्रमतुः । ततो रामभक्तः स्तुलसीदासोभोज्यानिभगवतेनिवेद्य बहुमानेन सर्वान्जनान् भोजयामास स्वयश्चबुभुजे । यथायोग्यं सम्मानिताः सर्वेस्वस्वस्थानंगताः तुलसीदाश्चससुखंगृहाश्रमंपालयामास । नित्यनियानुसारं पूजनकथादिकथयन क्रमशश्चलतिस्मसमयः–

दाम्पत्यप्रणय प्रकर्षभरितं भोगार्थसार्थंगृहं ।
श्रीमद्रामपदारविन्दसुरतिलोके यशः संस्तुतिः ।।
गार्हस्थ्यंतदिदं भवेद् गुरुकृपापीयूषपाकोद्भवं ।
जातं श्रीतुलसीविधस्यसदनं भूमिश्चनाकायते ।।१९।।

इतिचतुर्थंरत्नम्

पुरुषरत्नम्

रत्नावली साहाय्येनगृहाश्रमंपालयन् नियमानवर्त्तयन्कथां वाचयल्लोंकांश्च रञ्जयनसुखमास। एवं समोदंचत्वारिवर्षाणि व्यंत्तिक्रान्तानिएकस्मिन्नहनिसमागतेनभ्रात्रासहमातृगृहंगता रत्नावलीदेवी ततः शून्यागारे शून्यहृदयइव शुशोचगृहपतिः सस्मारच (नगृहंगृहमित्याहुः गृहिणीगृहमुच्यते) गृहिण्यारहितोगेहो भूतावास एव इत्यादिमनसाभावयन्नाह–

मृगाक्षी सुशिक्षा नतभ्रूः प्रियामे।
प्रयाता प्रियंमांपरित्यज्य किन्तत्॥
वियोगंतदीयं न सोढ़ास्मितस्मात।
स्वयञ्चापितत्रैव गन्तव्यमेव॥१॥

तद्रात्रावेवनदींतीर्त्वाश्विशुरसद्मसमवाप तत्र कृतस्वागतं गत श्रमं तं रत्नावलीसुशीला पप्रच्छ पतिदेवकिमत्याहितंयद्भवान् त्वरितमेवसमायातो भवतः कायेनिकाये धनधान्यपशुपक्षिषु ग्रामेचकुशलमस्ति। ततः स्नेहार्द्रहृदयो भूत्वोवाच प्रियेसर्वंशोभनं केवलं तवस्नेहात्तुवन्धेनैवाकृष्टः समायातः शून्यमन्दिरे स्थातुं नप्राभवम्। विरतवचसितस्मिन् विद्यावतीरत्नावली ह्रीणामनः प्राशस्त्यंप्रकाशयन्तीवबभाषे विद्वन् मलमाण्डेसतताशुचौ चर्मास्थिमांसपिण्डेममदेहेयादृक्प्रेमतादृशंयदिभगवतिरामेस्यात्किमावयोरल भ्यंस्यात् चतुर्वर्गोहिकरगतोभवेत्–

जगदिदमतितुच्छं शून्यपुच्छंविहाय ।
चिरचतुरसुधीराध्यायमानामहेशम् ।।
निखिलनिगमगम्यंयोगिनामप्यगम्यं ।
जनहितकृत चिन्ताज्ञानवित्ताभवन्ति ।।२।।

इति प्रौढ़ांप्रतिहतजगज्जालमालां मोहग्रन्थेः समुचित विमोकां वाचमाश्रृण्वतो वुधस्यहृदि वहुध्वान्तागारेवहुघृत् प्रदोपैः प्रकाशप्रावल्यमिवभगवतिमहन्प्रेमाजायत ततः स्वर्ण पञ्जरमुक्तशुकइव स्वात्मानंमन्यमानस्त्वरितंयातुं प्रयतः सम्बन्धिभिः प्रिययाचवह्वनुनीयमानोऽपिनतस्थौप्रवव्राज–

रतिविरतिद्वयविग्रहेप्रवृत्ते ।
किमिवभवेदितिमूढ़चित्तवित्तः ।।
परमिहभगवच्छ्रीरामवाञ्छानुसारं ।
विरतिविजयतोऽसौगन्तुमेवप्रवृत्तः ।।३।।
यदपिनिजपुरन्ध्र्याः प्रेमजाग्रत्ताथापि
भगवतीगतचित्तं चूर्णंयामासतूर्णम् ।।
तदुतसचमनीषीं कर्मयोगानुषक्ति ।
गुरुवरकृपयैवं कर्तुमेवाग्रगोऽभूत् ।।४।।

तदेवंदैन्यंविद्रावयनभगवद्भक्तिं च भावयन्प्रचचाल । किंञ्चिदध्वानमतिक्रम्यैकंग्राममवाप तत्र शुभपादपावली विलसित-भूम्यवकाशेसघनच्छाये कूपमवलोक्यतत्समीपस्थवृक्षतले समुपविष्टः तत्र समीपएव पूजासंलग्नं कर्म योगिधर्मनिष्ठंव्राह्मणंसौम्यमूर्तिं रघुनाथाभिधमपश्यत् । सभयः संकुचितश्चतं प्रणनाम । सच दत्ताशीर्वचनः संकेतेनैवेतमासितुं दिदेश । तुलसी दासश्चकितचकितोभूमावेवोपविवेश । चरिताचंश्चरघुनाथशर्मा वत्ससर्वाङ्ग

सुन्दरः त्वंशास्त्रज्ञो भासि कथंविषण्णवदनो दुर्मनस्कइव दृश्यसे क्वोष्टिः कः पिता को ग्रामो यत्र सुजनानसन्ति यत्त्वम नाथो यथा भ्रमसि तदब्रूहीतिकथितवान। सच सौजन्यजनितवचन माकर्ण्यंसप्रसादहृदयोमौनमुद्रामुत्सृष्टवान। भगवन राजापुर निवासिनश्रात्मारामद्विवेदिनः सुनूरस्मि। पारतारपितापुरस्थ दीनबन्धुपाठकस्यजामाता सुजनाश्चवहवः सान्ति किन्तु यदि कदा मम गृहणीस्वजनन्यन्तिकं संगता तदाहमपि मूढ़चेतास्तत्प्रे मवशः श्वसुरालयंप्राप्तस्त्वरितमेव। तत्र लब्धप्रवोधावधूर्ममस्वा- गतानन्तरं मम मोहंमारयन्तीह्रीणाचसमूचे। प्रवहन्मलनव- छिद्रेस्थिचर्मपंञ्जरेनितान्तमपवित्रेऽस्मिन्देहेप्रेमासचेतपरमात्मनिस्यात ततोजनिसाफल्यमावयोः स्यात चतुर्वर्गश्चकरगतोभवेत। तदेतत् वाग्वाणेननिहतोमनोमृगः प्रेमाकर्षणंत्रोटयनवहुशोऽनुनितोऽपि प्राद्रवम् विधानविमूढ़ोविमनस्कः कथमप्यत्रातगोभ्रमनभवद्वचना- मृतश्रवणेननवीनंजीवनंप्राप्तइवास्मिचेतिसास्त्रमूचे। तद्वदनमीक्षमा- णस्तद्वदनंश्रोत्रपथमानाचय स पण्डितः पुरुषरत्नं साधु भणितंतेपत्न्यागृहएवभक्तिर्भवितुं युक्ताकथंपलायसे। तदाहतुल- सीभगवनभाग्येनैवेतत्संजातम्। मायावद्धः कोऽपिलोकसेवां कर्तु- मक्षमस्ततः परोपकारएवपरमोधर्मोजगत्यामितिगुरुपदिष्टंसाध यितुं निर्दिशतुभवानितिसमाकर्ण्य श्रीरघुनाथशर्मा तंसमाश्वासय- नसाधुयद्येवंतर्हित्वंतुपण्डितोज्ञानविज्ञानसम्पन्नो गुरुणाचवोधितस्त- द्भक्तिप्राकरंजनोपकारजानास्येवभक्तिभजनभगवतोविश्वरुपस्यदर्श नंपूर्वमावश्यकंतोर्थंभ्रमणद्वारा विराजंपुरुषंपश्यततोवाराणस्यां वस- न्सर्वंशास्त्रसारमादाय रामचरित्रं निर्माय भविष्यत्यपिजनोपकारं करिष्यसितदितिपुरुषरत्नस्यसमाज्ञामादायतंपितरंमन्वानस्ततश्चा- त्राध्वनिगच्छंनमनस्यकरोत्साधुरयंपडितोनार्यंपालब्धंविमातृविमा- नितंध्रुवमिवनारदोमहर्षिरुपदिदेश। ततो मन्येमेकल्याणभवि-

ष्यत्येव । निष्कारणवन्धुरयंमत्प्रान्तेसर्वानस्मदीनपूर्णंतयाजानातित-दस्तुसाधयेयमहंतदुक्तंवर्णाश्रमधर्मंकर्मसामञ्जस्यं समाजसौष्ठवं च यथास्याद्भगवद्भक्तिप्रवणंशास्त्रसम्मतं निवन्धंनिर्मास्यामि । रामकृपयाऽयंमनोरथोयदिपूर्णः स्यादितिविश्वसिमिएवंभावयनप्रथ-मंतीर्थराजंजगाम । तत्र तीर्थंनियमान्निर्वर्तयन त्रिवेण्यांसस्नौनि-यमान्निर्वाह्य तत्रत्यानक्षयवटादोनुदेवान्दर्शंदर्शं कतिचिरात्रिर्भार-द्वाजाश्रमे निनाय ततः–

तीर्थानांनृपतेजनायजपते त्वांसर्वसिध्दिःकरे ।
तस्मादत्रसमागतोऽस्मिशमदो भूयाःशतंतेनतिः ॥
आज्ञांदेहिसमस्ततीर्थगमने मेस्याद्यथासन्मतिः ।
शक्तिश्चापिविनाश्रमंप्रभवतात्तीर्थेषुयात्रामम ॥५॥

स्तुत्वैवंरामराजधानीमयोध्यां प्रति प्रस्थितः । मार्गेगृहिणा मातिथ्यंगृह्णनधर्ममुपदिशनसरयूतीरमाससाद । तांनत्वा तत्रस्नात्वा च गुरुगृहंगतो गुरुं स्तुवनपूजयनवैष्णवींदीक्षांजग्राह । वैराग्यंद्रढय-न्विधीन् विधत्कर्मयोगेसंलग्नोयोगाङ्गानभ्यस्तवान । मारुतिमन्दि रमितस्तमानर्चतुष्टावच–

यौवैरावणरावणोरघुपतेरात्यन्तिकःप्रेमभाक् ।
सीताशोकसमापकोऽक्षयवलंविद्रावयन्द्राकस्थितः
वारम्वारमघोषयत्जयजयं प्राप्तस्सभांरावणीं ।
लङ्कालङ्कृतलङ्किनीछलवलोन्माथीजयेन्मारुतिः ॥६॥

पौलस्त्याशयमन्थकोगुरुतरग्रन्थोहरेः कीर्तने ।
धुन्वन्रामयशोध्वजामिवमहालाङ्गूलवल्लींमुहुः ॥

लङ्कामन्तरबाह्यतःपरिदहन रक्षोगणंक्षोभयन ।
तीर्त्वावारिधिमाप्यराममवदत्सीतामहंदृष्टवान् ।।७।।

श्रुत्वैतत्परमांप्रमोदलहरीं लब्ध्वाहरिश्रीहरिः ।
संश्लिस्याह समीरनन्दनमहोत्वंमेमहासाधकः ।।

तुभ्यंकिन्नुददानिकिन्नुकरवाण्यस्मित्वदीयः सदा ।
चेत्थंरामपरप्रियत्वमभजत्योसौजयेन्मारुतिः ।।८।।

यस्यप्रौढ़पराक्रमंकपिवराः शंसन्तश्चाहुश्चिरं ।
नैराश्यंचभयंत्वयाप्रतिकृतं जेष्यामइत्याशयात् ।।

वर्धन्तेतवकौशलेनपरमोत्साहाः कपीनांमनः ।
सोऽयंमारुतनन्दनोनिजगुणैः संस्तुयमानोबभौ ।।९।।

सुग्रीवोऽस्यमहाद्भुतंवलमहोदृष्टवानिजांवानरीं ।
सेनामुधृततद्गुणः सुमहतींप्रोत्साहयन्प्रीतिभाक् ।।

अस्माकंहिदशाननस्तृणतरोभूतोजयोनिश्चय ।
स्तंनित्यंहृदयेस्मरामि भगवद्दूतंसुरैरर्चितम् ।।१०।।

मारुतेतुलसीदासो दासस्ते स्यात्कृपाश्रयः ।
नान्योमनोरथः कश्चिन्मयिनाथः प्रसीदतु ।।११।।

एवमञ्जनानन्दनंनुत्वातधृदयेश्वरंभगवन्तंरामंमहाराजंसम्पूज्य विनयमवोचत्-

महाराजोरामोरघुकुलमणिर्लोकतिलकः ।
सुधीधीरोधर्मावनकृतमतिः शूरसुभगः ।।

अधर्मप्रध्वंसी सुजनपरिपाटीपरिकरः ।
तमीशंदेवानामधिगुणमहं चेतसिभजे ।।१२।।

क्रतुं वैश्वामित्रं सफलयितुमिच्छन्निशिचरीं ।
निहत्याहल्यायाःशपनशमनः श्रीजनकजाम् ॥
धनुर्भङ्ग कृत्वानीत्वा पथिभृगुवरंराममजयत् ।
समायातोऽयोध्यांनृपतिविजयीसोऽस्तुशरणम् ॥१३॥

विमातुर्वैमत्याद्वनमुपगतोलोकललितो ।
हृतासीताप्रेष्ठातदनुविरहंसोढुमशकः ॥
दशग्रीवंहत्वाजनकतनयाशोकशमकः ।
सुराणांसाम्राज्यं विदधदयमायात्स्वनगरीम् ॥१४॥

विलज्जांवृण्वानांरघुपतिरसौशूर्पकरजां ।
विनासांकृत्वैनांखलबलमहन्तीव्रविशिखैः ॥
तथामारीचाख्यंकपटहरिणं दूरमनयत् ।
प्रभूरामोमह्यंवितरतु भयाभावमनिशम् ॥१५॥

दशास्यंप्रोज्जास्यं शमननगरीप्राघुणमथो ।
विधायैतद्बन्धुंनृपतिपदभाजं विहितवान् ॥
विशुद्धांवैदेहींधनपतिविमानेकपिगणैः ।
सहारोप्यायोध्यामुपगतहरिर्मेस्तुशरणम् ॥१६॥

भगवन्भवदङ्घ्र्यब्जमिलिन्दोऽस्मिततोमम ।
भ्रमणंतेपदोर्भूयादितिवृत्तिमप्रदेहिमे ॥१७॥

प्रत्यहमेवंकुर्वन्कथांवाचयतिस्मरामभक्तिञ्चप्रसारयति । प्रवचन शैलींवोधनप्रकारंवाङ् माधुर्यंगायनपटुतांश्रृण्वन्तोऽयोध्याजनास्तस्यै-वकथांप्रशसन्तोऽन्यान्कथाकथकान्तत्यजुः । एवं व्यतिकरेसमुत्पन्ने ते कथकास्तस्मैचुक्रुधुरेनंनिन्दतोनिरासायास्यषडयन्त्रंप्रयुक्तवन्तस्तदेत-द्विज्ञायसाधुस्तुलसीदासः स्वयमेवतत्स्थानाद्गन्तुमनाविचारयामास ।

यदत्रत्यानांलाभेमानेच मत्कारणाद्धानिर्भवतीति नसाम्प्रतंतत्साम्प्रत-
मेवमयागन्तव्यं तदज्ञात्वाकोऽपियवनोयोगीतंस्वरक्षणेस्थापयितुम-
नुरुरुधे। किन्तुतीर्थयात्राऽवश्यंकरणीयेतिगुरोराज्ञातेनभवतोनुरो-
धंसाधयितुंनक्षमोऽस्मि। भवत्सौजन्यायसाधुवादंददानो यामि
इत्थंभूतेसाधून्पण्डितान्सुजनाश्चदेवांश्चस्तुत्वानत्वाप्रथमंतीर्थंरत्नभू-
ताजगन्नाथपुरीदर्शनियेतिनिश्चिकाय। ततो भगवन्तंराममनीषीत्—

रामस्त्वमेवजलधेर्निकटेवसन्सन्।
स्तम्भादभूरितिजनान्परिवोधनाय॥
दारुण्युवासजगतांखलुनाथ एव।
तंत्वाभजेभवम दीयदृशोःप्रसादः॥१८॥

इत्थंस्तुतिंकुर्वतिरामदासे।
वभूवरामोहृदिसुप्रकाशः॥
आशिरियंमेविहितेतिमत्वा।
हर्षातिरेकं तुलसी वभार॥१९॥

"इतिपञ्चमंरत्नम्"

तीर्थरत्नम्

अथ शोभनसमयेरामन्ध्यायन् कमण्डलूकम्वललकुटादि समादाय जगन्नाथपुरीं प्रतिप्रस्थितः। पथि लोकलोकालयसरित्त-डागारामक्षेत्रकेद्वारादीनांशोभां पश्यन् काननेषुनानाभूरुहेषुस्योनाक पादपाः सफलाधृतखड्गायोद्धारइवआरग्वधाश्चफलिनोधृतकुन्ता-जनाइव कुत्रचित्क्षेत्रेजबानाललताः शिरः पुष्पाः काण्डे काण्डे प्रलम्बफलचितावहुवालावालायथेतिपरितुष्यन् भाषा भूषा वेश वसन समाजव्यवहाररीतीश्चजानन् तत्र तत्र विश्रम्य विश्रम्य ययौ। एकस्मिन्दिने दुर्वावलीनाम्निग्रामे प्राप्तस्तत्र स्वल्प कालएव-स्थितः किन्तु दैवयोगत्केनापिनिमित्तेन हरिरामनामकं विप्रं शेपे त्वं प्रेतोभवेतिविचित्रेयंघटना। सप्रेतस्तुलसीदासमहोपकारीभ-विष्यति। तदग्रे कुत्रचिद्ग्रामेकुमार्येकामिलिता तस्याः सेवया संतुष्टस्तस्यैवरं ददौ। तव हस्तगतंधनमक्षयंभवेदिति तदेवं प्रकारेणोत्तरप्रदेशविहारवङ्गानतिक्रामन् जगन्नाथपुरीं ददर्श। रामं स्मरन् प्रविश्यमन्दिरसन्निधिस्थिततीर्थंब्राह्मणगृहेसम्बलंनि-क्षिप्यतीर्थधर्मान् कुर्वन् भगवद्वारदेशमागत्य भगवन्तंजगन्नाथं नत्वा विशालांपयोराशि वेलां लेभ। तोयनिधिं नत्वा प्रार्थयामास—

श्रीरामपूर्वपुरुषैः पितृमेधसिद्धयै।
मेध्यंहयंसमधिगन्तु मनोभिरेवम्॥
त्वं निर्मितोऽसि जलरशिरसौततोऽहम्।
नत्वाभवन्तमिह रामकृपांलभेय॥१॥

वरुणालयतेवलल्लहरीभिः प्रताडिता ।
स्तठभूम्यांसमापन्नाः शङ्खशूक्त्यादयोजनैः ॥
लभ्यन्तेमस्न्यसेतैस्तु महोपकृतिकारक ।
स्तत्वदीयंमहौदार्यं कोहिवर्णयितुंक्षमः॥२॥

जामाताहृदयेयस्य वर्त्ततेहरिरीश्वरः ।
प्रशस्तिस्तस्य काभूयात्सर्वदेवमयोहियत् ॥३॥

इत्थं पारावारंनुत्वा नत्वा लहरीभिः स्नात्वा नित्यनियमं निर्वर्त्यं रामापररूपं जगतांनाथं समर्हयामास पुरुषसूक्तैः सहस्रनामभिश्च । स्मरंश्च कतिचिद्दिनानि तत्रस्थितः तीर्थमिदं रत्नभूतमिति. यतोजगन्नाथनगरे भेदवोधिनी स्पृष्टास्पृष्टिः कापि नदृश्यते । अत्रैव च वाल्मीकीयरामायणस्यप्रतिलिपिं लेखितुमारभत । यस्य सम्पन्नता वाराणस्यामभवत् । १९४६ तमे वैक्राम्ब्दे जनैर्निगद्यते । ततोनाथंस्मरन्प्रस्थितो मध्येमार्गं नाना पुण्यक्षेत्राणि दर्शं दर्शं वहुप्रयाणकैः रामेश्वरधामप्राप्तस्तत्र महेश्वरं वरिवसित्वास्तोत्रंचकार–

शिवः शर्वः शम्भू पशुपतिरथोधूर्जटिरपि ।
महेसोविश्वेशः पुरहरगिरीशौ त्रिनयनः ॥
कपाली शूलीवा गगनवसनः पञ्चवदनः ।
किमप्येकंनाम भजतिमनुजेसर्वविभवः ॥४॥

ममेष्टदेवस्थ रमापतेस्त्व
मिष्ठोऽसिहेदेवततोनतोऽस्मि ।
रामेयथामेमनसोऽनुरागो ।
भवेत्तथाकर्त्तुमिहार्हसित्वम् ॥५॥

भवत्कृपाकंटाक्षेण वीक्षितस्यनकस्यचित् ।
शुभाकाङ्क्षाक्षयादेव गतोऽस्मिशरणंतव ॥६॥

ततः सेतुबन्धवद्धं महार्णवं विलोक्य प्रणम्य रामप्रभागं भावयन् तुष्यन् रामशिवयोरभेदं भावयन्द्वारवतींपुरींप्रतिप्रस्थितः—

कालेकालेकर्मंकुर्वन्प्रयाणे ।
जाननवृत्तांदैशिकंवैबुधोऽयम् ॥
श्रीमद्रामं कृष्णरूपेऽपिपश्यन् ।
प्राप्तोद्वारं द्वारवत्याः प्रदोषे ॥७॥

निशिविश्रम्योषसि शान्तस्वान्तः समुद्रतीरमागतो नित्यक्रियां सम्पाद्य भगवन्तंद्वारकाधीशं समभ्यर्च्यस्तुतिपरोऽभवत्—

अकिञ्चनस्यविप्रस्य सुदाम्नस्तण्डुलान्भवान् ।
भुक्तवान्दत्तवांश्चास्मा ऐन्द्रीसम्पत्तिमुत्तमाम् ॥८॥

अहन्तेकिंप्रदास्यामि मूढोऽस्मिभगवन्ततः ।
मदीयागमनेनैव प्रभुर्मेसम्प्रसीदतु ॥९॥

हरयेरोचतेभक्तिरिति शास्त्रेषुदृश्यते ।
तयाऽऽनीतोऽस्मितस्मात्तु दृष्टिर्देयामयिप्रभो ॥१०॥

भक्तिप्रियत्वंभवतोनशेषो वक्तुंसहस्रैर्वदनैरपीशः ।
पृथासुतानांविजयायदास्ये सारथ्यदौत्येभगवन्प्रसन्नः॥११॥

यद्राजराजस्य सुयोधनस्य राजाशनंत्यक्तमभूत्परन्तु ॥
दासीसुतप्रेमवशेनभुक्तं शाकंत्वयैवेति तवस्वभावः ॥१२॥

द्वारकेशजगन्नाथ पाहिपाहीतिभूमिगः
ननामाष्टाङ्गकोदासस्तुलसीहरिसेवकः ॥१३॥

एवं नतिं नुतिं च विधाय बदरीधामदिदृक्षयाप्रचलितः । प्रथमं हरिद्वारमायातस्तत्रभागीरथीमपूर्वामिवावलुलोक श्राद्धयाच समनौत्-

शिष्टानिष्टविपाटनाय तटतस्त्रैविष्टपात्पाटिता ।
गङ्गोतुङ्गतरङ्गभङ्गभरिता भूमौभवेभारते ॥

भङ्गारङ्गप्रसङ्गघूर्णितदृशो मत्तोत्तमाङ्गंगता ।
शम्भोर्याविजया जयंजनयति प्रोद्दामपुण्योदया ॥१४॥

वेलल्दवल्लिविलासलोललहरीवेगप्रगत्याधरा ।
विध्वसंविदधातिधूर्जटिटाऽऽटोपेनिवद्धाध्वनि ॥

धारापारनिवरिताघपटली पुण्यप्रबाहापरा ।
गंङ्गागौरवमावहत्यतितरां श्रीभारतेभारते ॥१५॥

भूधराधारमास्ताापितद्धराध्वंसधारिणी ।
धरणीमागतालोके कल्याणीजननीमम ॥१६॥

एवं विनीयनमस्कृत्यहरिपद्धतिंगत्वादेवादीन्दर्शंदर्शं हृषीकेश-स्वर्गद्वारकनखलञ्च पश्यन् प्रशंसन् भूधरराजस्यकुटिलोच्चनीच-मार्गे वाव्रज्यमानो देवतरुन्सर्जंशालादीन्कुसुमितानकुसुमिताश्च मनोहरान्निभालयन् सुखदसमीरैर्निःश्रमोभवन् नरनारायण तपः पूतंवदरिकाश्रमंसमवाप अस्तौषीत्–

वैकुण्ठोयोविहितजगती रक्षणार्थंस्वरूपं ।
धत्तेनानाविधिहरिहरक्रोडकूर्मादिकञ्च ॥

सोऽयंनारायणनरइति प्रख्ययात्रप्रसन्नः ।
नामंनामंतमिहवदरीधाम देशंनतोऽस्मि ॥१७॥

ययोस्तपः प्रभावेण वदरीधामविश्रुतम् ।
नरनारायणौदेवौ दृष्ट्वामेसफलंजनुः ॥१८॥

इतिक्रमेणाधीयन् सतीर्थंयात्राप्रियः कस्यचिद्ब्राह्मणस्य देव प्रियस्यगृहे तस्यसौविध्येननीरवकोटरेन्युवास । दिनें दिनें । देवानां दर्शनंस्पर्शनं वा कुर्वंन्ब्रह्मकपाले श्राद्धमकरोत् । तप्तकुण्डे स्नान मपि । तदेवं स्थानमाहात्म्यं श्रृण्वन्मन्यमानः कतिचिदहानिन्युष्य कैलासमवालुलोकिषुः प्रातिष्ठत् । मानसरोवराकृष्ठमानसश्च गङ्गावतरणंयमुनोद्गमंविलोकयन्नमन् तयोः प्रभावञ्चभावयन् प्रर्वतीयवक्रातिवक्रनीचोच्चाध्वनिहिमवहलेमनोवलेनचलतिस्म । शास्त्रदृष्टानिलोकश्रुतानि च स्थानानिनिरिक्षितानि । भगवद्दीय रचनावैचित्र्यंचित्तेविचिन्त्यप्रहर्षंपराधीनः प्रचलन कैलाशलिखरं नयनगोचरं कृतवान्–

कैलासधन्योऽसि घराधराणां ।
भूपस्यमूर्ध्निस्थितवानमहार्हः ॥

ततोऽपिविश्वेश्वरपादपद्म ।
पूतः शिवायाः प्रियतांप्रपन्नः ॥१९॥

देवात्सदात्वामधिगन्तुकामा ।
भूम्नोभवर्ष्येङ्गितमीहमानाः ॥

प्रसादभूमिभंवितोऽह्यद्य ।
जातोऽस्मितद्रामकृपैवदेव ॥२०॥

शिवनिकेतनं प्राप्य गोव्याघ्रमूषकमयूरादिशाश्वतवैरिणा मेकत्र समुदायंसमुदीक्ष्यसगिरिजस्यभगवतोविश्वम्भरस्य प्रभूतप्रभा- वंभावयन्गणेशनन्दिषडाननादिगणं सम्भावयन् भवस्यसमर्चामाच- चार । शिवसहस्रनामपाठान्ते--

स्फटिकशैलनिभंशशिशेखरं ।
बृषभवाहनमीशमुमापतिम् ॥
मकरकेतनमारक माश्रये ।
त्रिभुवनैकनियन्त्रकमीश्वरम् ॥२१॥

अगुणमेकमनेकगुणंप्रभुं ।
सकलकारणकारणवर्जितम् ॥
अनुपमंनिखिलोपममद्वय ।
मतुलभूतिप्रभूतविभूतिदम् ॥२२॥

शिवमहंसमहंसमुपाश्रये ।
ऽमरनरेशपरेशमहेश्वरम् ॥
सुरसरिच्छशिशोभितमस्तकं ।
मुररिपोरपि वैभवकारणम् ॥२३॥

अपारपुण्यप्रवहप्रधानं ।
दिगम्वरं दीनदयाविधानं ॥
समस्तसन्त्रस्त जगतप्रकाशं ।
नमामिनित्यं जगतोनिवासम् ॥२४॥

अथ तुलसीविहितः स्तवोहितुभ्यं ।
स्वदतांनाथ सनाथतांकरोतु ॥

रघुकुलमणिपादयोर्यथास्तु ।
मतिरित्येव ममाभिलाषभाषा ।।२५।।

तवस्तवोऽयंतुलसीविर्निमितो ।
विभत्तु लोकस्य मनोरथश्रियम् ।।
व्यपेतबाधा रमतामनारतं ।
रघूद्वहेत्वद्दृयथामतिर्मम ।।२६।।

अथ सर्वाङ्गैः प्रणिपतितस्यसाधोर्मूर्ध्निशिवसमर्पितमालूर दलं निपपाततेनासौशान्तस्वान्तःकृतकृत्योबभूवह । ततो मानसरोवराभ्याशमासाद्यनिभालयामास । प्रकृतिकृतस्वच्छस्फटिसोपान परम्परावद्धं क्षीरनीरभृतं सिद्धगन्धर्वपुरन्ध्रीधृतधूपधृतदीप कुसुमाक्षतशोभिततटं मरालमालामिलनसर्वभागललामलोभनीयं श्वेतपीतलोहितकमलवलयविलसितं देवदारुपारिजातागुरुचन्दन पादपोत्पादित्सौन्दर्यं नानाजलचरराजितान्तरालं भृङ्गाङ्गनागुञ्जनाहूतदर्शकजनमिवविशालं तारागणगुणितंगगनं यथानिरीक्षमाणस्तुतोष तदन्तरंमुक्तिनाथकुण्डमूरुपाचलनीलाचलौचविलोक्य जगन्निवासनिवासभूतं योगिजनमानसमिवमनसिसमासादितवान्सतुलसीदासः । कञ्चित्कालं तत्रोषित्वापरावर्त्तमानोमन्दंमन्दं कतिपयैः प्रयाणकैः श्रीरामनिवासपूतीकृतं वैदेहीकृताभिषेकपुण्यगङ्गोदकं चित्रकूटमायातस्तत्र च तारणींमण्डपिकांविरच्य निश्चलः स्थितः–

सस्माररामं हृदयेवसन्तं ।
नीलोत्पलाभं जटिलंससीतम् ।
सुखंवसेतीवसमुच्चरन्तम् ।
शुभंवचोवेद सविप्रसाधुः ।।२७।।

इतिषष्ठरत्नम्

प्रेतरत्नम्

अथ रामगिरौ वर्त्तमास्तुलसीदासो नित्यंचौषस्यं कार्यं निर्वर्तयन्–

वैदेहीहृदयाधिनाथचरणस्पर्शैश्चपुण्यालयैः ।
पूतोरामगिरिः प्रभूतसुकृताधारोमहीध्रेषुयः ।।

सीतारामरसायनाह्वजपनेसोऽयंसहायोमम् ।
तेनाहंनितरांनमामिशतशः श्रीचित्रकूटंगिरिम् ।।१।।

रामोयत्रतपोधनैर्मुनिवरैर्मुक्तस्पृहैः सेवितः ।
सीतालक्ष्मणसंयुतः सुविहिते सत्सङ्गपुण्याध्वरे ।।

तस्मिन्तापसकर्मधर्मसुकरे त्रैलोक्यनाथप्रभुः ।
दीनानाथजगत्कृपापरवशः श्रीराघवःपातुमाम् ।।२।।

तदेवंध्यायमानोनित्यंकथांवाचयतिस्म । तदानीन्तनानां मुनीनां मनोऽमोदयत् । समये समये ऋषीणामाश्रमेषु यात्वायात्वा ज्ञानविज्ञानवतर्चां श्रृणोति स्वयमपि च वदति । तदित्थं प्रचलति काले कदाचित्प्रातः शौचात्वरावर्त्तमानं साधुं मार्गेचलदलतरुस्थः कोऽपि प्रेतस्तं प्राह–साधो प्रत्यहंपरावर्तमानेनभवता सिक्तंपयः पीत्वाशान्तिमाप्नुवेऽतः प्रसादसुमुखोऽस्मित्वंकिञ्चिद्याचस्व तच्छ्रु-त्वा कस्त्वं कुतः प्रेतभावश्चेतिपृच्छतितस्मिन्वेदावली ग्रामेयंहरिरामनामानंद्विजंभवानसमशपत्सएवाहमित्युवाच । दैवयोगादेवमभूद्रामः क्षाम्यतु इति कथयित्वोक्तंनाहंकिमप्यभिल-

ष्यामि। यदि भवेन्मांश्रीरामंदर्शय तदोक्तंप्रेतभावमापन्नेन हरिरामशर्मणानेदंसामर्थ्यंमयिकिन्तूपायन्तेकथयामियेन भगवद्-दर्शनं लप्स्यसे। तव कथावाचनसमयेप्रत्यहंभगवान्हनूमान् तवकथां श्रोतुमायाति। समाजतोदूरेचोपविशतिस्वात्मानंकुष्ठिनमिव दर्शयति। तमनुनीयस्वाभिलाषंसाधय। पूर्वंनाहंनाहमिति वदिष्यति किन्तु निर्बन्धेनप्रसन्नोभूत्वा प्रतिज्ञां करिष्यति। श्रीरामं दर्शयितुमिति। विचित्रांघटनांरामकृपयैवा मन्यत। ततः स्वकथावाचनसमये कदाचित्समाजतोदूरेवर्तमानंकुष्ठिनं ददर्श कथान्तेसमाजेगते तमुपगम्यप्रणम्यकरौबद्ध्वाऽऽहभगवन्भवान् हनुमान्रामदययैवभवद्दर्शनंभवति। तत्सेवकं मां विधेहि भगवन्तश्च दर्शयेतिवन्दतं कुष्ठिसमालपत् नाहं वायुकुमारः कुष्ठी मानवोऽस्मि कस्त्वांप्रतारितवान् मां मारुतिं कथयन्। ततः तुलसीदासो गन्तुकामन्तं चरणयोर्गृहीत्वाऽऽर्त्तोभूत्वाऽनुनीतवान् ततश्चात्मनं प्रत्यक्षीकृत्यतंतोषयत। समराधनं भगवतः कुरु समयेन द्रक्ष्यसि श्रीराममिति। ततो वारंवारं नमतिसाधौ सतिरोऽभूत्। काले गच्छति रामभजनपरेतुलसीदासे कतमस्मिन्नहनिवनेपर्यटनददर्श कावपिशोभनाश्वारुढौश्यामगौरोविशिष्ठसौन्दर्यवन्तौराजकुमारौ चामन्यत। अथकस्यामपिनिशीथिन्यांरामभक्तोमारुतनन्दनः स्वभक्तंतुलसीदासमप्राक्षीत्। श्रीरामंदृष्टवानसि भगवन्भवत्कृपा यदाभविष्यति द्रक्ष्यामि। तदोक्तमञ्जनानन्दनेन किं तस्मिन्दिवसे विपिनेविशिष्टवाहारुढौ रामलक्ष्मणौनापश्यः श्रुत्वैत्तुलसीदासो महाशोकाकुलोऽभूत पुनःसमीरसुतनुनोक्तंमाविकलोभूः पूनर्दर्शनं लप्स्यसेभजनपरायणोभव स्वभाग्यंनिन्दन् निरतिशयतोभजनेऽभिलनः कालं प्रतीक्षतेस्म एकस्मिन्दिनेचित्रकूटघट्टोपरितुलसीदासंचन्दनमयाचतकोऽपिबालः तस्मै चन्दनमर्पितं कुर्वति साधौ पुनरयंभ्रान्तो भवेदितिभक्तप्रियोमारुतिस्तम्बोधयामास–

साधोचन्दनयाचकोऽयमधुना श्रीरामएवस्वयं ।
जानीयाःकिलचित्रकूटतटकेमातेभ्रमोजायताम् ।।

भूत्वात्वंश्वसमाहितः प्रभुवरंप्रीतस्तमालोकय ।
तच्छ्रुत्वावहुविह्वलोलगुडवत्प्रीत्यापतत्पादयोः ।।३।।

तदपूर्वंसौम्यंरूपंविलोक्यहर्षातिरेकात्संज्ञाहीनंवोधयामास केशरीकुमारोवालश्चतिरोऽभवत् । तदेवं प्रेतोक्तोपायेनभगवद्दर्शनं लभमानः श्रीतुलसीदासः अहोऽयंप्रेतः प्रेतरत्नमितिमन्तव्यम् । एवं देवैरपिस्पृहणीयं रामदर्शनंलब्ध्वाकृतकृत्योमहात्माकंचित्कालमतिक्रम्यकाशीमागतोहनुमद्घट्टेगंगातटेन्युवास । किन्तुतत्रमोहमदीयानां यवनानांवाहुल्यात्स्वानुकूलतामनवलोकयन् तत्पदं परित्यज्य विश्वनाथतउदीच्यांश्रीगोपालमन्दिरमागत्यमाधवराजस्यवाटिकायां नैरित्यकोणेकुट्यांन्युष्यभजनपरोऽभवत् । सामण्डपिकातन्नाम्नाऽद्यापिश्रूयते सासदामुद्रिताभवति केवलं श्रावणसप्तम्यामुद्घाटिताभवति सम्भाव्यते च जनैर्यत् सोऽत्रैवविनयंपत्रिकांलिलेख यतः पञ्चगङ्गावेणीमाधवयो र्विशदंवर्णनंविलोक्यतेतत्र । कञ्चितकालं प्रह्लादघट्टेऽपिन्युवास । अथ चश्रूयते लंकाक्षेत्रेयः संकटमोचन नामामहावीरः प्रसिद्धः काश्यां सम्प्रत्यपि जाग्रतवर्णीचि स तुलसीदासेनैव स्थापितः कामनापुरकोजनैरर्च्यंते तस्यस्तवनमपिसंकटमोचननामकमकार्षी तुलसीदासोलोकानामुपकाराय—

वालोरविंग्रसितवान् जगतीत्रयञ्च ।
घोरान्धकारभरितं खलुदेवलोकाः ।।

त्वां प्रार्थयन्त तदुभास्करमोचनेन ।
लोकावभुस्त्वमिति संकटमोचनोऽसि ।।४।।

सौमृत्रिणासहयदा महिरावणेन् ।
नीतस्तले चजगतोरघुवंशवीरः ।।

तंमोटयन्निजवलेन ररक्षतौतत् ।
देवत्वमेवकिल संकटमोचनोऽसि ॥५॥

शक्त्याहतश्चसमरे सुरराजजेत्रा ।
सौमित्रिरार्त्तिमभजद्रघुवंश केतुः ॥
संजीवनींनिशिनिनेथतदात्वमेव ।
सौख्यंविधायजनसंकटमोचनोऽसि ॥६॥

आदेशतःकपिनृपस्यजगामसेना ।
संमार्गणायमिथिलाधिपपुत्रिकायाः ॥
तांनाधिगम्यमुमुहे जलराजतीरे ।
दृष्ट्वैत्य तत्रकपिसंकटमोचनस्त्वम् ॥७॥

सुग्रीवएगनिजबन्धुवधाद्विभीतः ।
स्त्रातस्त्वयैवरघुवीर सखित्वकारिन् ॥
किन्तेपराक्रमनवेनहिलोकसिद्धः ।
ख्यातोजनेषु समसंकटमोचनोऽसि ॥८॥

स्तोत्रमेतत्पठेद्यस्तु मनसाचसमाहितः ।
संकटान्मुच्यतेशीघ्रं महावीरप्रसादतः ॥९॥

एतत्प्रसङ्गेनैव समहात्माअसीसङ्गमतीर्थस्योत्तरेभागेगङ्गातटे कुटींनिर्माय्यन्यवसत् । तत्रापिमारुतिमूर्तिः स्थापिता यत्रनित्यं कथामवाचयत् । अत्राद्यापिवहूनितस्योपकारणानिर्वत्तन्ते यान्यवलोकितुं दर्शका आयान्ति च । एषणांविहाय भगवद्भजनलग्नो रामचरितचर्चासमाचरन्सुखमत्रावर्त्तत । अत्रैव च स्वमानसानुसारं रामलीलांस्थापपित्वान् । याद्यापिप्रचलति तदेवमनेकप्रकारेण रामभजनंभावयन् कदाचित्तीर्थयात्राञ्चाकरोत् । यदाजनकपुरं

यियासुश्चलनभृगुक्षेत्रं समवाप। गंङ्गास्नानंभृगुमूर्तिदर्शनञ्चकृत्वा गायघाटनामके नरनिवासे हैहयवंशीयस्य गम्भीरदेवस्यातिथिरभूत् तेन च वहुमानपुरस्सरंसत्कृतः। ततस्तुक्रान्तब्रह्मपुरग्रामे महा-शूद्रस्यसँवरुदासस्यसुतेन मगरुनामकेन कृतांविशिष्टां सत्क्रियांल-ब्ध्वा तस्मैशुभाशीर्वादंदत्तवान् महात्मायत्तववंशःसततं चलिष्यति यदिकोऽपिचौरोवाजारोवानभवेत्। ततोऽग्रेचलनहरिहरक्षेत्रं गत्वा-नारायणीगंङ्गासंगमे सस्नौ। हरिहरनाथं समर्हयामास तदनन्तरं पुण्यक्षेत्राणि दर्शंदर्शं जनकपुरं गतो यत्र श्रीरामो विश्वामित्रेण-मुनिना साकंगतो विदेहराजस्यपण हरकोदण्डोत्तोलनरूपंज्ञात्वाधनु-र्भञ्जनेन समवेतान्राज्ञोनिष्प्रभान् कृत्वा व्युवाहजनकात्मजां भार्गवंरा मञ्चवोधयामासस्वावतारंतदेवंमङ्गलमाल्यधारीसपरिजनोऽयोध्यां-दशरथराजधानींसमायातइत्यादिसत्प्रभुत्वंश्रीरामभगवतश्चिन्तयन्-तत्रत्यानि पावननिदृश्यानि विलोकयन् वाराणसीं समीयाय किन्तुत्व-रितमेवयत्राष्टाशीतिसहस्रसंख्याकामुनयोलोककल्याणाय सत्रंसमा रब्धवन्तस्तन्नैमिषारण्यंक्षेत्रमवालुलोकिषुः प्रथमंरामराजधानीम-वधपुरीं यात्वासूकरक्षेत्रमार्गेणलक्ष्मणपुरंप्राप्तस्तत्रकाञ्चित्कालंस्थित्-वाप्रचलितोऽनेकेषुस्थानेषुस्थायंस्थायंनैमिषारण्यमासदित्वान्। अत्र वनखण्डी वावामहात्मा त्तीर्थोद्धारार्थंसप्रयन्तश्रासीत्तस्यसाहाय्यंच कुर्वंन्तत्कार्यंसुसिद्धं विधाय त्रयोदशमासान्नीत्वा यत्र श्रीकृष्णना-म्नोत्तीर्णोरामस्तांमथुरांयदुराजधानीमाजगाम। तत्प्रसङ्गेनवृन्दा-वनंसमायातस्तत्र च मथुरावृन्दावनयोर्महात्म्यभावयन् रक्षोविना-शंगोपगोपीगोधनसम्वर्धनादियमुनाकूलविलासादि च स्मरन वि-चित्रंकृष्णचरित्रं चिन्तयन्तुलसीदासः प्रसन्नस्तस्थौ। तत्रस्थंभ-क्तमालरचयितारं माहात्मानं नाभादासंमिलितवान्तेनसाकंसत्-सङ्गंकुर्वंन्दर्शनीयानिगोकुलगोवर्धनवरसानुप्रभृतीनिपुण्यानिनिरीक्ष-माणोब्रजस्यमहत्त्वंमन्यमानः श्रीकृष्णमस्तौसीत्—

नार्योऽपियन्मयतयामुनिराजलभ्यं,
स्थानं गतायुवतयोमदनानुविद्धाः
गोपाङ्गनाः किलकदम्बकुलावलम्बीं,
वर्हावतंसितशिराभगवान्ससेव्यः ॥११॥

मुररिपोर्मुरलीध्वनिरत्रवै,
जनमनो मदमादधदेवयत् ।
श्रुतिपथोपगतोयमुनातटे,
श्रुतिसुतत्वमिदं परिभाव्यते ॥१२॥

हृदयपद्म सुसद्म समाश्रिता ।
समवसत्किलयस्यसदेन्दिरा ।
सखलुरासमहोत्सवकृन्मना ।
व्रजवधूनिरुरोध वने वने ॥१३॥

अनङ्गरङ्गमन्दिरे कदम्बगन्धसुन्दरे ।
नितान्तभृङ्गगुञ्जनेनिकुञ्जदवसुन्धरे ॥
व्रजाङ्गनाङ्गसंगमेनचन्दनानुविन्दनः ।
कलिन्दनन्दिनीतटेननन्दनन्दनन्दनः ॥१४॥

कलङ्ककज्जलान्वितं शशाङ्कमङ्गनामुखं ।
मिलन्मिलिन्दपङ्कजं किमित्यहोविचिन्तयन् ॥
अनङ्गसांङ्गभङ्गरां सखीमवाप्यकामपि ।
कलिन्दनन्दिनीतटेननन्दनन्दननः ॥१५॥

सखीमुखेशशिच्छटे विधायवर्हमण्डनो ।
मुखंनिकुञ्जवद्धटे जनागमेविशङ्कनः ॥
स्त्रियौविलोक्यसद्धटे निलीयलग्नचन्दनः ।
कलिन्दनन्दिनीतटेननन्दनन्दनन्दनः ॥१६॥

निहत्यकंसं मथुरामुपागतो ।
नृपश्रियंतज्जनकायचार्पयत् ।।
विमोच्यवन्धात्पितरौसुदुःखितौ ।
वभौयशोदानयनोत्सवप्रदः ।।१७।।

द्वारकामावसनेराज्ञोधर्मराजस्यसुस्थितिम् ।
संस्थाप्यराक्षसान्हत्वा जगच्छान्तंचकारह ।।१८।।

एवं श्रीकृष्णस्यौदार्यसौन्दर्यपराक्रमप्रभावनानाकेलिदर्शनाल्लीलापुरुषोत्तमत्वमधीयन्परममुद्सन्दोहमवाप । तदेवंक्रमेणबृन्दावने कतिपयदिवसान्स्थित्वाप्रतस्थे वहुप्रयाणकैचत्रकूटंसमाजगामकिमपीहमानोऽत्रालपकालमेवस्थित्वा हस्तिनापुरंसमेत्यसाकेतपुरीमायातः । स्थितश्च श्रीरामप्रादुर्भावस्थानं वाललीलास्थलंशाशनभूमियज्ञस्यहयमेधस्याधारभूतंसरयूतटंस्वर्गारोहणोपादानं वाशिष्ठीतीरंच भ्रामंभ्रामंविलोक्यरामचरित्रंलोकोत्तरमितिभावयन् पुनः काशीमागतस्तदानोमत्रधोरधिषणो धर्मात्माटोडरनामा भूमिहारब्राह्मणः, भदैनी, नदेश्वर, शिवपुर, जीतुपुरं, लहरतारा इति पञ्चग्रामाणमधिपतिरभूत् । तेन सह तुलसीदासस्यमहान्स्नेहानुवन्धोवभूव अनयोश्चप्रेमगोष्ठ्यासुखेनसमयः समेति । यदा च साधुभक्तः सटोडरदेवः शिवसायुज्यंलेभेतुलसीदासोवहुशुशोच लिलेख च--

तुलसीहृदयविमलकेदारे टोडरगुणगणवाटिका ।
प्रेमस्मारंस्मारामिह द्वयोर्दृशोरभिषेचिका ।।१९।।

श्रूयते टोडरदेवस्य पुत्रपौत्रेषुदायभागविवादे समुपस्थिते महात्मनैव निर्णयोदत्तः सर्वैः स्वीकृतः । तथा श्रावणशुक्लसप्तम्यामिदानेमपि परिवारैरेभिःतुलसोदासनिमित्तमन्नदानं क्रियते—

अथ कदाचित्सम्राजो यवनराजस्याकवरस्य महामंत्री अब्दुल रहीमखानखानामहान्कृष्णभक्तोभूत्वामहाकविरप्यभूत् तेनापि सहगोस्वामिनो विशिष्टामैत्रीजाता। तदैकदा कोऽपिब्राह्मणो निज कन्याहेतोर्धनार्थंतुलसीदासमनुरुरुधे ततः स तस्मैपत्रंदत्वा रहीम कविपार्श्वंप्रेषित्तवान् मित्रस्यपत्रमितिसादरमादायप्राभृतकमुन्मुच्यप ठतिस्म तत्रवार्तावृत्तानन्तरमुसुरतियनरतियनागतिय- असचाहत-सबकोय इत्यर्धमुपपाठ। ततो द्विजम्पूणमनोरथंकृत्वा पत्रंसमस्यां च पूरयित्वा "गोदलिएहुलसीफिरेतुलसीसोसुतहोय" इति पत्रंदत्वाभूसुरं विसर्जयामास सच गोस्वामीनंप्राप्यततपत्रं तस्मैप्रादात्। पत्रवाचनानन्तरं गोस्वामी ब्राह्मणंपूर्णमनोरथं स्वसमस्यापूर्तिश्चज्ञात्वाऽतितुतोष। अथ किमनेनधनेन तवकार्यं भवेदितिद्विजमपृच्छत्सचामृपर्याप्तमस्तीतिकथयन्तंद्विजंविसर्जयामास अथश्रीरहीमकवयेपत्रमलेखीत्।

मन्मनः स्पर्शियत्काव्य
मभूत्त कविसत्तम।
मन्येभूयात्त्वदीयस्य
यशसोऽयातयामता ॥२०॥

लोकचेतः समाकर्षि कविकर्मप्रशस्यते।
दृश्यतेत्वयितत्प्राज्ञ लोकोपकृतिकृद्भव ॥२१॥

पत्रंलब्ध्वा श्रीरहीमकविः सप्रसन्नोजातः एवञ्चस्वामिनः सौशील्यसौजन्यसमवेदित्वसमदर्शित्वादि गुणैः प्रससारप्रभूतः प्रभावः सर्वदिक्षु। ततश्चानेकेसाधवोभक्ताराजानोधनिनश्च समायान्तियान्ति तेषाञ्च निवन्धेन्नानिच्छन्नपिवस्तुजातानि कनकादीनिचाङ्गीचकार तज्ज्ञात्वाकस्यामपिनिशिथिन्यां स्तेनाः समायाताः कुटीपरिसरेतत्रश्यामगौरौ द्वौवालकौ रक्षकौ दृष्ट्वा

परावृत्ताः।   पुनरपिसमागतास्तौदृष्टवन्तस्ततस्तेश्रीतुलसीदास समीपमेत्यपृष्टवन्तः कौ वालौश्यामगौरौभवतो यौ कुटीरंरक्षत इति तच्छ्रुत्वा गोस्वामीतानवोधयत् तेसाधवो जाता तुलसीदासश्च ममस्वामीममधनरक्षायैकष्टंसहतेतद्धनं नरक्षणीयमितिमत्वा सर्वं-घनंब्राह्मणेभ्योयाचकेभ्योदीनेभ्योपिविनियुयोज । तदेवंसमति-क्रामतिसमयेकदाचिन्महात्मानाभादासोवृन्दावनतः समायात स्तुलसीदासंमिलितुं तत्रसमयेऽयंसमाधौमग्नआसीत् स महात्मा तममिलित्वैवपरावृत्तः समाधिसमुत्थितश्चासौतदागमनंपरावर्तनं चावगम्यतंनिरीक्षितुं वृन्दावनसमैत । तदानींतन्मठेमहाभोज आसीत्तत्रानिमन्त्रितोऽपिरामदासस्तुलसोसम्मिलित इति ज्ञात्वा नाभादासस्तमनादृतवान्परंपायसपात्राभावे यदाअनेन कस्यापि साधोरुपानहंसमादायमहत्पवित्रमिदंपात्रमितिब्रुवतातत्रक्षीरमादत्तं तदा नाभादासोहृदयेनाश्लिष्य तं समूचे मद्भक्तमालस्य मध्यमणिरयमिति। द्वौमहात्मानौमहनीयौजातौ ततः कदाचित्काले गोपालकृष्णसेविकासाधुसङ्गप्रेमवतीमीरादेवीस्वस्वामिना परिवारेण च तत्कृत्तु निवारिताभर्त्सिताच श्रीतुलसीदासं पत्रप्रेषणेन-प्रार्थितवतोमहात्मन्ममभजनेमदीयाविघ्नंकुर्वन्तिकिमहंकुर्यामिति-पठित्वा तुलसीदासस्तांप्रावोधयत्। सर्वंत्यक्त्वाहरिंभजेत् परिवारमोहंत्यक्त्वानिर्भीकाभूत्वाभजनपरायणाभवेति ततःसावहु-तुष्टाभगवत्प्रिया संजाता। श्रीकृष्णभक्तस्यप्रज्ञाचक्षुष (सूरदा-सस्य) च सख्यंकृतवान्सत्संगञ्चतेनसहतदानींकश्चिदकथयत् सूर-दासोहिश्रीकृष्णभक्तोभव अरामसेवीतदातुलसोदासेनोक्तम्–

श्रीकृष्णेपुरुषोत्तमेरतिरभूत्सूरस्यप्रज्ञादृशः।
रामेपुष्कर लोचनेमतिरियंजातामदीयेतिकिम्॥
स्वस्वाभ्यन्तरभावनाहियदृशीयस्यास्तित्तांधारयन्
भक्तस्तंभजतेतयोर्नहिभिदाचेत्येववस्तुस्थितिः॥२२॥

इदश्चश्रूयते यत्कस्मिश्चिन्मन्दिरेयातः कृष्णं प्रार्थयत्—

वर्हंमुकुटकटिपीतपटशोभाभिर्वहुराजसे ।
तुलसीदासोनतशिराः करधन्वायदिभाससे ।।२३।।

दर्शयाम्वभूवचकोदण्डकरमात्मानंश्रीकृष्णः । इत्थंकदाचित्कालेहस्तिनापुरघण्टापथेमत्तंमातङ्गमाचिक्रांसुं रामनामवलात्परावर्तितवान् । तथाकस्यापिब्राह्मणस्यक्षेत्रगंङ्गागर्भेगतंगङ्गाप्रार्थनया तस्मैकेदारंदापितवान् । विप्राभ्यर्थनांपूरयन्तद्दुःखंन्यवारयत् कंचिन्महीसुरकुमारंशमनसमीपादानाययामास । तदेवंप्रकाराणि वहूनिकार्याणितस्यश्रूयन्तेः भगवद्गभक्तानामुदारचरितानांकिमप्यसम्भाव्यनैवेतिकिंवाक्पल्लवनेन । तदानीन्तनायोगिनोभक्ताः साधवोराजानश्चकाव्यकर्तारश्चतंसमाद्रियन्त । एवंमहात्मायं प्रसृतयशाविशेषप्रयासैस्तीर्थानिधामानिनगराणि च भ्रामंभ्रामं निवृत्यकाशीमागत्यससुखमुवास—

रात्रौचिन्तञ्चरणयुगलंरामचन्द्रस्यचैवं,
सर्वैश्वर्यंजगदिदमहोचित्रवैचित्र्यमेव,
स्वप्नेऽपश्यत्परमचकितो विश्वरूपंप्रभाढ्य,
मीशस्यायंभवतिमहिमासुप्रसादः प्रभोर्हि ।।२४।।

"इतिसप्तमंरत्नम्"



ग्रन्थ रत्नम्

उदितवतिदिनेशे रात्रिनाथेप्रयाते ।
नभसिविरलतारे ध्वान्तशान्त्योः प्रणाशे ॥
खगकुलकलरावे जायमाने प्रकाशे ।
गुरुजनकृतवाञ्छां संस्मरन्सप्रवुद्धः ॥१॥

जगतिजननिवासे जायमानो जनोयो ।
नरहितकृतवुद्धिस्तस्य सर्वासमृद्धि: ॥
इति मनसिविचिन्वंन्किं विधेयमयेति ।
सकलविषयसिध्दी रामभक्तिप्रसक्तिः ॥२॥

तस्याःप्रचारो जगतो हिताय ।
ततः समस्तं विषयं विहाय ॥
शास्त्रानुसारं करवाणि राम
तवप्रसादोऽत्रभवेत्सहायः ॥३॥

यद्यपिसम्राजायवनराजस्याकवरस्यशाशने मही राजन्वती धर्मंनिपेक्षतासमवर्तिताशान्तिश्चजनैरन्वभावि तथापि जयचन्द्रपृथ्वी राजयोर्वैमत्यादन्येषांराज्ञांचानैक्यात्परदेशायानामाक्रमणंप्रवृत्तंयत्र प्रथमं महमूदगजनवी नामा मोहमदशयो धनगृध्नुः परदेश समृद्धिमसिहष्णुर्बारंबारंभारतमाक्रान्तवान् । देवमन्दिराणि राजभवनानि ध्वसंध्वसंवहूनिमणिरत्नानिनीतवान् शोमनाथस्य कथातुप्रसिद्धैव तदेवंधर्मंध्वंसयन्मानवान्मदयन् सतीदूंषयन्निर्वा-

र्घंप्रविवेशभारतेततोराज्यलोभोऽपिजागृतस्तस्यभारतस्यानेकप्रान्तेपुस्वराज्यंस्थापितवान् । तदेवंपूवप्रवृत्तव्यतिकरेभारतोयाआर्याश्चापिविकृतमतयोधर्मेभगवतिचाविश्वस्ता विमूढ़मतयः किं कर्तव्यविमूढ़त्वेनविभिन्नमार्गगामिनोधर्मध्वजिनोधैर्यहीनास्वेच्छयाऽधर्मंदम्भञ्चस्वीकृत्यवर्णाश्रमविहीनाःपुरुषार्थमजानन्तोवर्त्तन्तेस्म । यस्ययदेवभातितदेवकुरुते-इतिपश्यन्महामनाश्रीतुलसीदासोधर्मसंस्थापनार्थंलोककल्याणञ्चवाञ्छन्ब्रह्मर्षिनारदइवशुशोच । भगवन्तं राममधीयन्नुनुवे हेभगवन् स्वीयंधर्मप्राणंभारतंदुर्गतिगतंविलोकयन्कथंसहसे—

दैत्यक्षयेसुरक्षेमेक्षमोभुविसदाभवान् ।
नविलम्वोविधातव्योभारतंभारतंकुरु ॥४॥

ततः शुश्रावतुलसीदासोभागवतींगिरम् ।
धर्मान्सनातनान्ब्रूहि प्राकृतैर्वाक्यविस्तरैः ॥५॥

जानकीजानिजीवातुं कोजानातिजडोजनः ।
षडवर्गेणापवर्गस्य कथासंभाव्यतेकुतः ॥६॥

दीनवन्धुकृपासिन्धुकारुण्यं ममसाधनम् ।
दीनोऽयंदैन्यमुच्छिद्यदत्तोत्साहोस्मिहे विभो ॥७॥
मानसेसेवितंयत्तन्मानसंविदधाम्यहम् ।
सप्तसोपानसम्वद्धं रामायणमिदंशुभम् ॥८॥

तदित्थंभावयन् निगमागमपुराणेतिहासदर्शनप्रोक्तोपनिषत्सारमादायभक्तिमूलकंमानवधर्मप्रचाराचारचयंरामहृदयंरामायणंमानसापरनामकंविरचयामास इदं च लोकभाषायांग्रन्थरत्नमभूत्तेनभारतेवर्णाश्रमधर्मसामञ्जस्यंपाखण्डखण्डनंसच्चारित्र्यंसाधुलक्षणंभगवद्भक्तिप्रावल्यं च प्रादुरभवत् । आर्यजनानांकियदुपकारकमिदंग्रन्थरत्नमितिकथनेनकिं यदुपकारोऽद्यापिजगति जाजागर्ति

प्रायोविदेशेष्वपि श्रीभगवद् गीतावत्सम्मानंलभते ग्रन्थरत्नमिदम् । मानसरचनाप्रारम्भः चैत्रशुक्लनवम्यांपूर्तिश्च १६३२ वैक्रमाब्दे मार्गशीर्षशुक्लपञ्चम्यांजाता । तत्रचारण्यकाण्डान्तम्योध्यायां शेष-भागञ्च काश्यामितिविचारकाग्रनुमिन्वते । तदानीन्तनावाराणसेया विद्वांसोरचनामिमांनिनिन्दुःयदयंविप्र सुरभारत्यामहांतमपकारंकृत वान् । नीचाः प्राकृताग्रपिधर्मंप्रवक्तारोभवेयुर्वयंकिंकरिष्याम इति -विरुरुधिरे । तस्यांस्थितौतुलसीदासोविदुषःप्रार्थयामास यत्को ऽपिनिष्पक्षोवुधोग्रन्थमिममालोक्यविचार्यंचयत्कथयेत्तदेवाहंकरिष्या -मि । ततः पण्डितैर्भणितंयोऽयमानन्दकानननामाब्रह्मचारी सकथयतु विलोक्यग्रन्थमितिततोऽसौब्रह्मचारीमानसंमनसापठित्वा-विचार्यं च प्रशशंस ग्रन्थरत्नमिदंभारतीयानामिदानीतनानांमहो-पकारकंभविष्यति । तत. आनन्दकाननेकश्चिज्जङ्गमस्तुलसीतरुः, कवितामञ्जरीयस्य रामभ्रमरभूषिता, इति प्रशस्तिमुल्लिख्य-ण्डितेभ्योददौ । ततः पण्डिताः शान्तावभूवुः पद्यमेतत्श्रीमधुसू-दनसरस्वत्यालिखितमितिकेऽपिकथयन्ति । एवं जातेऽपि वहवोह-ठधर्मिणो विरुद्धाएवासन्तज्ज्ञात्वागोस्वामीचित्रकूटं प्रायात् तत्रस-मयेतेस्वप्नमपश्यन् यत्विश्वनाथः कथयति ममभक्तो युष्माकंभ-यात्काशींविहायगत स्तमानयतेतिततश्चित्रकूटंगत्वासाधुमनुनीय समानीतवन्तः सम्मानञ्चचक्रुः स्वामीचशान्तचेतास्तान्मानयन् सुखेनाविभुक्तेसततंन्युवास अथ च तस्ययशः सर्वतः प्रसृतंस्तुवन्ति च विपश्चितः—

भूमिदेव शशिनंतवकीर्तिः,
स्वानुरूपमधिगम्यगतासीत् ।
सोऽपिसार्द्धमनयारममाणः,
कज्जलाङ्कनकलङ्कमवाप ।।६।।

यशप्रकाशं भवतो विलोक्य,
क्रोधाद्विधुः कृष्णमुखोवभूव ।
दिशश्च सर्वागगनंसमुद्राः ।
दुग्धोदधित्वं गभिताहितेन ॥१०॥

आत्मप्रशंसामसहमानस्तुलसीदासोऽवदत् माकार्षुर्मां ह्रीणंभवन्तो भवतांदासोऽस्मि युष्माकंसानिध्यात्यत्किञ्चिदवाप्तंतदेवलिखितंमया नान्यन्मन्मनःप्रभूतं तन्नास्मिप्रशस्तिभाक्‌भवच्चरण नलिनानांचञ्चरीकोऽस्मि । एवं वुधान्‌दिनयन्‌जनान्‌प्रसादयन्‌स्वयमपि शान्तस्वान्तः नरकाव्यंनिर्मायधनोपार्जनंगर्हितंमन्वानः केवलं भगवद्भक्तिविषयकानेवग्रन्थान्‌जग्रंथ-रामगीतावली, कृष्णगीतावली, रामचरित्रमानस, दोहावली, कवितावलो, विनयपत्रिका, सतसयी, रामललानहछू, जानकीमङ्गल पार्वतीमंगल वरवैरामायण, हनुमानवाहुक, वैराग्यसन्दीपनी, रामाज्ञा इति १४ पुस्तकानि निवबन्ध । सर्वाणीमानिस्वनामानुकूलगुणपूर्णानिईश्वरभक्तिः भजनप्रकारःभक्तिवैशिष्ट्यम्‌मनोविज्ञानम्‌समाजीयस्थितिः, राजनीतिः छन्दोलङ्कारारीतयश्च इत्यादिगुणैः परिपूर्णानि चेत्थंमानवोपकारकार्यंरतश्रान्तरमानन्दमनुभवन्‌तत्रकाश्याम्‌स्थितः नित्यमुषसिलघूडुपेनजाह्नवीमुत्तीर्यप्रभातिकंभ्रमणंविधायागम्यस्वाश्रमसमीपेगङ्गायांस्नात्वानित्यनैमित्तिकोः क्रियाः कुर्वन्‌पञ्चदेवपूजनं समाप्यकथांकथयतिस्म । एकस्मिन्‌दिनेकोऽपिकृतहत्यः पुरुषः समायातोऽवदत् किं कोऽपिरामप्रियोजनोऽस्तियोमांक्षुत्क्षामं भोजयेद्रामप्रीतये तदिदंरामनामसंवलितंवाक्यमाकर्ण्यप्रसन्नस्तं भोजयामासइतिवुध्वाकेचनब्राह्मणापप्रच्छु.र्गोस्वामिनं किं भोःकथंहत्यारायास्मैभोजनंदत्तवान्‌भुक्तवाञ्चानेनसार्धंकिमस्यहत्यापगता-ततोऽवादीत्‌तुलसीदासोभवन्तोहिविद्वांसःशास्त्रमर्मज्ञाः किंरामनाममहात्म्यंनजानीथरामेविश्वासंनकुरुथ . तदेवंकथितेऽपितेनविशश्वसुः-

तदोवाचकथंविश्वासोभवेद्भवतामितितऊचुः श्रीविश्वनाथस्य-नन्दीप्रस्तरमूर्तिर्यदितस्यहस्तदत्तांवालतृणंमस्नीयात्तदाप्रतीतिरस्माकंभवेत् तुलसीदासोहत्यारहस्तेनदत्तंघासमाशयामासनन्दिनंरामनामजपप्रभावेणततस्तेचकितामौनंदधुःह्लीणाश्चजातातत: कलिःप्रचुकोप। मयिस्थितेत्वमेवंकरोषितदेवंतेनभर्त्सितो गोस्वामीस्वाभीष्टदेवंकेशरीनन्दनंदध्यौतदोक्तंहनुमतात्वमेकांविनयपत्रिकांलिखि-त्वामह्यंदेहिभगवतेदर्शयिष्यामितदाज्ञयापत्रिकांविरचय्यतस्मैददौसतांरामायदर्शयित्वाततश्राज्ञांलब्ध्वाकलिंदण्डितवान्शान्तोजातइतिश्रूयते। भगवद्रामदयागोस्वामीसाहित्यस्यसमाजस्यसेवांकुर्वंनवहून्याश्चर्याणिकार्याणिकृत्वावाराणसीमध्यास्त पाठति—

हेरामतवनामैव सर्वं कार्यस्य साधकम्।
नित्यंनैमित्तिकंकाम्यं सिद्धं चेत्थमवाधितम् ॥११॥

कोशभेदंभवच्छेदं कुर्वंतीयत्स्मृतिः पदम्।
परंददातितन्नामरामेति सततंजपेत् ॥१२॥

हेरामनामतवमेऽस्तिपरंनिधानम्।
तेनैवकार्यमखिलं विहितंप्रधानम्॥
तस्यैवभूरिमहिमास्ति यदस्मिकाश्याम्।
श्रीविश्वनाथधृतहस्तइवप्रसन्नः ॥१३॥

"इतिअष्टमंरत्नम्"



पुरुषार्थरत्नम्

काश्यामसीसङ्गमतीर्थपार्श्वे ।
वसन्वसानोवसनंमुनोनाम् ।।
रामानुरागेगतचित्तबृत्ति ।
विश्वेवरंवैमनसार्चयामि ।।१।।
उमाधवंमाधवमादिकेशवं ।
ढुण्ढिन्तथान्यानपिक्षेवदेवान् ।।
पश्यन्प्रसन्नोमणिकर्णिकाञ्च ।
सत्सङ्गलग्नोभजतेऽन्नपूर्णाम् ।।२।।

तद्यानींकोऽपिगहरवारक्षत्रियोराजाराजघट्टेवर्ततेस्मतस्यराजकुमारोमृगयार्थंकुत्रापिवनेगतोऽभूत्तेनसाकंगत कोऽपिसहचरोद्वीपिनानिहतः किन्तुराज्ञाश्रुतंयद्राजकुमारएवहतइति ततःप्रहलादघट्टस्थंगङ्गारामनामानंज्योतिर्विदमाहूयाप्राक्षीत्मृगयांगतस्यराजकुमारस्यवृत्तंब्रूहियदिभवत्कथनात्तुसारंकुमारआयास्यतितर्हितेलक्षंदास्यामि अंयथातेशिरश्च्छेदोभवेत्तदेतदाकर्ण्यंपण्डितोऽन्यस्मिन्दिनेकथपिष्यामीतिभणित्वास्वगृहमागतउन्मनस्कस्तस्थौअयञ्चतुलसीदासस्यसखाद्वौप्रत्यहंमनोविनोदार्थं गङ्गापारंयातःअत्रदिवसेखिन्नमना गङ्गारामोयातुंनप्रस्तुतस्तदोक्तंगोस्वामिनाकिमद्यविमनाविवर्णवदनश्चलक्ष्यसे । तदोक्तंपण्डितेन राजादेशंश्रुत्वाततस्तंसान्त्वयामासभविष्यतिसमाधानंराज्ञो माकातरोभूः ततोरामाज्ञानामकंपुस्तकंरचयित्वातत्रश-

कुनंकारितवानशकुनेसिद्ध यत्शकुशलःकुमारश्रायास्यतितज्ज्ञात्वाप-
ण्डितोराजनंप्राप्यवोधितवान्द्वितीयदिवसेकुमारश्रायास्यतिसकुशल-
इतिराजकुमारागमनंयावत्पण्डितोबन्दीभूतः समायातेकुमा-
रेपण्डितोलक्षंलब्ध्वायातः लब्धंधनंगोस्वामिनेनिवेदितवान्तदाना-
ऽतिप्रयोजनंधनेन मेमतितवैवभवतुत्वमेवरक्ष परन्तुपण्डितस्यनिर्ब-
न्धेनद्वादशसहस्त्रमादायद्वादशमारुतिमन्दिराणिनिरमापयत् तेषु-
मूर्तीश्चास्थापयत् केशरीकुमारमस्तौषीत्—

सुमतिनाव्रतिनारघुनन्दन ।
प्रियकृतासुकृतावलशालिना ॥
कृतमभून्मयितन्नविकत्थनं ।
जगदिदंमुदमादधदेवही ॥३॥

यदणुमंशमवाप्य तु जन्तवः ।
श्वसनमादधते जगतीतले ॥
तदनुरूपममु हरिविग्रहं ।
परिचरामि चरामि तु कमसु ॥४॥

अहमिदं कृतवान्सुकृतंजने
तदुभवेच्चदयैवनचान्यथा ॥
नहिभवेदिह कोऽपिकृतार्थको ।
रघुपभक्तसमर्चनमन्तरा ॥५॥

बहुधनैर्विविधैरुपचारकैः ।
प्रभुवरानभवन्ति वरप्रदाः ॥
प्रवलप्रेमपरैर्वचनैरपि ।
निजजनेजनयन्ति परांश्रियम् ॥६॥

करुणयापरयाभवदीयया ।
परिगतः सजनःसुजनोभवेत् ॥
जगतिजीवन-मस्यतु वाञ्छितं ।
परपदंलभतें सुरदुर्लभम् ॥७॥

अकिञ्चनस्यापि ममात्रकिञ्चन ।
प्रेमाभवेत्तोषकरं तदेवहि ॥
प्रमापकं भक्तजनानुकम्पनं
घरन्तिघर्माध्वरदीक्षितासुराः ॥८॥

एवंदेवान्लोकपालाश्चसम्य-
गर्चंन्चर्चां चारुरामस्यकुर्वन् ।
काशीनाथंमोक्षदातारमेव ।
चिन्तञ्चित्ते चिन्तनोयामृतञ्च ॥९॥

कृतं कृतं सर्वमिदं हिलौकिकं ।
ननिर्मलं केवलमाश्रितंमया ।
समाश्रये केवलमेव केवलं ।
यतोभवेदेवपरार्थसिद्धिः ॥१०॥

एवंभगवत्प्रेमनिर्भरेगोस्वामिनिचलति च कालचक्रेपञ्चपञ्चाश दुत्तरषोडशतमे वैक्रमाब्देकाश्यां यवनसमाज़ीयानांधर्मान्धनां दुर्बृतानां दुर्दमनीयानां सनातन धर्मध्वंसन व्रतानां दुर्व्यवहारान् सोढुमक्षमा जनता स्वधर्मरक्षायै वद्धपरिकरा भगवच्छरणमेवास्माकं सम्वलमितिमत्वाश्रीतुलसीदास्योपदेशेन श्रीविश्वनाथढुण्ढीराजान्नपूर्णारामहनुमदादिदेवानांस्तवनार्चनकीर्तनादिचक्रे । इदानीं कालचिन्तकानांमतेन व्रह्मविंशतिका, विष्णुविंक्षतिका, रुद्रविंशतिका इतितिस्त्रःक्रमेणचलन्ति, तासुरुद्रविंशतिका चलति यत्र

संहारप्रकारएव विशेषः इतिजनैस्तुलसीदासो रुद्राभिषेकं शतरुद्रीयै -र्मंत्रै विद्वद्भिः सविधिकारितवान् ततो यवनोपद्रवेशान्तेऽपि काचिदपूर्वामहामारी (प्लेगाभिधा) समायातातयापीड्यमानानां जननवतां महाज्वरः कक्षोरुमूलयोर्महान्तः पिटकाश्चभवन्तिस्म ततश्चकरुणापरायणेन तेन साधुनाद्विगुणोत्साहेनमहारुद्रातिरुद्र विधया शिवसमर्चनं मारुतिपूजनं श्रीरामनामकीर्तनञ्च कारितं जनतया ततो जनजीवनंसुरक्षितमभूत् तुलसीदासः स्वयंतुष्टाव भगवन्तं विश्वेश्वरम—

श्रीविश्वनाथ भवदीय पुरे पुरारे ।
पौराः परं परिभवन्ति परैश्वरोगैः ।।
एतान्निजान्स्वकृपया कुरुनिः सपत्नान् ।
हृष्टा भवन्तु निरुजो भवदङ्घ्रिलग्नाः ।।११

दीनानुकम्पनपरोभगवानितीयं,
सिद्धाप्रथाकथमहो विफलाभवेद्धि
एवंत्वदीय नयनेङ्गित मीक्षमाणा
स्त्वन्नाम कोर्त्तनपराः सुखिनो भवेयुः, ।।१२।।

नाद्यापि कोऽपि भवदङ्घ्रिपरस्यपुंसो
वाञ्छाविघात इति चिन्तयतां जनानाम् ।।
भूयास्त्वरैव समशोकविमोकहेतुः ।
तेस्युस्तवेक्षणतः करुणारसार्द्राः ।।१३।।
रामस्यदासतर एव परं भवन्तं ।
श्रुत्वाऽसुतोषमितिते चरणान्तिकेहम् ।।
प्राप्तोऽस्मितत्स्व नियमंकुरु विश्वनाथ ।
शीघ्रं जनान्सुखयताद्भवदङ्घ्रिपद्मम्।।१४।।

एवंजनान्सुखिनोविहितवान्ससाधुःस्वयमेव रुग्णो जातो

वाहुपीडाज्वरादिपीडितस्तुष्टाव—

सर्वेलोकाहिजनन्ति हनुमस्तुक्पारसैः ।
सिक्त तुलसीकादासंतस्मात्संरक्षमां प्रभो ॥१५॥

सत्वरंकुरु निर्वाधंशरणं त्वत्पर नहि ।
मदीयं मस्तकं नाथ भवतस्चरणोपरि ॥१६॥

सेवकस्यत्वदीयस्य मन्तुंकमपि नेक्षताम् ।
महतांमहाशयोदेवः पाहि पाहि जनेश्वर ॥१७॥
दण्डञ्चयन्त्रणांधेहिमयिवहुविधयाऽपि च ।
मोदकैर्म्रियमाणस्य कालकूटं कथं भवेत् ॥१८॥

साहसीयः समीरस्य रामस्य च परः प्रियः ।
वाहुपीडांमहाबीर शीघ्रमेवविनाशय ॥१६॥

वाहुमूलंवृद्धशूलं कपिकच्छुलतोपमम् ।
जायमानं बीरकाले विषमेतन्निवारय ॥२०॥

वेदना विद्यमानाया विशिष्टा पापतापजा ।
छद्मजा कर्मजावाथ मंत्र तंत्र भवाभवेत् ॥२१॥

पापिनोदुष्क्रियापाली मलिनातामसीचया ।
प्राप्तोऽस्मियन्त्रणां नाथ बदामीत्थं हिंडिडिमैः ॥२२॥

वायुपुत्रप्रभावेण भीतावीता भविष्यति ।
महावीरस्यधीरस्य वीरताशपथोमम् ॥२३॥

मनोहि रामदूतस्य प्रमाणं वायुजन्मनः ।
मदीयभुजयोः पीडापीडितेंवभविष्यति ॥२४॥

आत्मनः पापजालेन त्रितापैर्वाथिशापतः ।
वृद्धायावेदनावाहोः कथ्यते न च सह्यते ॥२५॥

शरणागतवात्सल्यं ह्यमोघं सर्वदैवहि
वत्स एवत्व.ीयोऽस्ति पालयैनं कृपां कुरु ।।२५।।

इति व.दति रुजार्त्ते प्रादुरासीन्महत्वं
पवनतनयर्व.रस्येति नैरुज्यमात. ।।

रघुपति पदपद्म ध्यायमानोहि भक्तो ।।
हृदय कमल पुष्पै संविधास्यैव तुष्टः ।।२६।।

अथ च पद्यगन्विगद्यवाक्यै रामं भेजे सर्वकर्ताकालहर्ता लोकभर्त्ता कल्याणकारी ीनतापहारीमुरारीर्मानदाताविधाता दीर्घबाहुः सुरनरसौख्कारी वेदवेद्योवेदवक्ता वैद्यो भवरोगविद्रावी दैत्यदर्पदलनकेलिः कर्मंधर्मंशर्मंनर्मंविधयासाकेत विहारी सर्वलोकोपकारी भगवान् रक्षतु रक्षतु मम च वाहुपा ोदरपीड़ां पीडय पीडय सर्वंमामयमनामयं कुरु कुरु देवभूतकर्मकालखलकुलकृतग्रहजदावानलज्वालामालाभरइव मेघेन मेघवर्णेन तवसर्वं शान्तमिति रामभजनप्रभावः ।

नाथ स्वाभाविकोऽयन्तेदासो नतु क्रीति इति जानात्येवप्रभुरेव कुम्भजशिष्योमेवगोखुरजले मग्नोऽभूत प्रभोअपारस्तवकृपापारावारः तव महिमानं वर्णयितु शारदापि न विशारदा कोऽहं नरपशुविहङ्गोवा । हे राम पूर्णकाम प्रकद्दितापूर्वफलद रामनाम तवदासस्य किमेवमभूदिति समधीयन् विषीदामि । किन्तुभवदाज्ञयैव कर्मणां भोगादेव क्षयइति मन्यमानः सुखमासे ।

हृष्टिंपष्टिञ्चतुष्टिञ्च भुञ्जानो रामवल्लभः ।
रामरामेतिरामेति जपन्कालं नयाम्यहम् ।।२७।।

रामस्य भजनान्मुक्तिर्भवतीति सुनिश्चयः ।
सा काश्यामविमुक्तेच जावालोपनिषत्स्थिता ।।२८।।

वाचस्पतिर्देवगुरुर्याज्ञवल्क्यं महामुनिम् ।
बोधयामासतस्माद्धि काशीसेव्यासदाजनैः ॥२९॥

इतिनिश्चितचेता रामसेवी ससाधुः ।
निखिल निगम गीतान्योगयोगान् विहाय ।

रघुवर हृदयेशं विश्वनाथं समञ्चन् ।
परमसुखमकथ्यं शान्तमन्तर्दधानः ॥३०॥

रामानोपह राम राम जनता सत्कार्यसौकर्यकृत् ।
प्रोद्यामोद्यतवाहुदण्डयुगलो त्रै विक्रमोद्यतपदः ।

नागो मत्स्य वराहकौ नरहरिर्वैकूर्मखर्वोभवन्
यस्तं भूतभवद्भविष्यदधिपं नंनम्यमाने नुवे ॥३१॥

कुले कलिन्दजाया गोपीजनानु कूले
गोपालवालवृन्दैः क्रीडन्कदम्बमूले ।

गोपाङ्गना जनानां रोधः स्थिते दुकूले
संचोरितेऽकरोद्यो ध्यायन् व्रतानु कूले ॥३२॥

वृन्दावनावनाय क्षुब्धेन्द्र वृष्टि पाताद्
गोवर्धनं कराग्रे धृत्वा जनान्समन्तात् ।

दुर्धर्षशीतवातादाच्छाद्यसंररक्ष
गर्वं हरन्मघोनो यः सर्वं सिद्धि सिद्धः ॥३३॥

रामो वभूव भूपोभूपालसत्क्रियाणां
सन्दर्शकोदयावान् यो पालकस्त्रयाणाम् ।

नेष्टेष्ट हानिलाभान् बुध्वा सदा समानान्
चर्यंचचारार सम्यङ् निघूंय चायमानान् ॥३४॥

त्रिवेदंत्रिदेवंत्रिलोकन्त्वमेव
ततः किं स्तवैस्ते विभो विश्वनाथ ।

प्रभोभावमेवं बुधाः कीर्त्तयन्ति
कुतोऽहञ्चकोऽहञ्च मां पाहि पाहि ।।३५।।

हरे नागहारेऽपहारे नायानां
विभो ब्रह्मवामाङ्ग चेलाञ्चलोत्थः ।
दादानेऽनिलो मत्यु दुःखं जनस्य
विहन्तीति वेदार्थसिद्धिः प्रसिद्धिः ।।३६।।

एवं कृतमतितुलसीदासः समयन्नयन् वियद्वसुरसैकमिते वत्सरे नभसि सितसप्तम्यां मन्दाकिनीकूले सुघनच्छायेऽश्वत्थतले योगासनेनस्थित्वा ध्यानवधूतधर्मकर्मामिषतां मानवानां ध्यानगम्यो-बभूव ।

सुरवराभवभूतिविधायका
द्विजजनाः किलब्रह्म विचारकाः ।।
नृपतयोनयपालनतत्पराः
सकुशलताजगतीतिशिवं शिवम् ।।३७।।

मेघोवर्षी मेदिनी सस्य पूर्णा
धर्मीचार्थी लोकलोकश्च सम्यक
प्रेमप्राणोगैसमाजोहिभूया
दार्यावर्त्तेवर्त्ततामार्यधर्मः ।।३८।।

"इतिनवमंरत्नम्"

मरणं मङ्गलं यत्र विभूतिश्च विभूषणम् ।
कौपीनं यत्र कौशेयं सा काशी किन्न सेव्यते ।।

